

कृषक



दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

● भोपाल मंगलवार 08 से 14 जुलाई 2025 ● वर्ष-26 ● अंक-07 ● पृष्ठ-20 ● मूल्य-20 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

खरीफ विशेषांक-2025



ग्रामीण क्षेत्रों में 21 लाख पाठकों वाला कृषि एवं ग्रामीण विकास साप्ताहिक

इफको का है वादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा

फसलों की भरपूर पैदावार के लिए इफको के उत्पादों की उत्कृष्ट श्रृंखला

आत्मनिर्भर भारत आत्मनिर्भर कृषि

इफको के उत्पादों की अधिकतम लागत का रु. 10000/- (अधिकतम 2 लाख) का आर्थिक लाभ प्रदान करता है।

इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड राज्य कार्यालय- ब्लॉक 2, तुलसी ताल, पर्यावास भवन अरसा हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

ऑफिस-लाभकारी हेतु : www.nanoureia.in - www.nanodap.in एम.पी. 180 180 1807 | [/iffco.coop](https://www.facebook.com/iffco.coop) | [/iffco.coop](https://www.instagram.com/iffco.coop) | [/iffco](https://www.youtube.com/iffco) PR | [/iffco](https://www.whatsapp.com/iffco)

RMPCL

ZIRON

नया तरीका, नई उमंग, मेरी फ़सलें बढ़ेंगी ZIRON के संग

फसल के हर पड़ाव पर **मैग्नीशियम, जिंक, बोरॉन** से खरीफ में दिखेगा असली फर्क।

यही है किसान के उन्नति का सही फॉर्मूला

www.rmphosphates.com | Toll free: 8956926412

के-मैक्स सुपर मिट्टी सही तो फसल बाहुबली

प्रयोग मात्रा
4-8 किलो ग्राम
प्रति एकड़



*अधिक जानकारी के लिए के-मैक्स नोलेज सेन्टर
1800-572-5065 पर सम्पर्क करें।

ECOCERT
द्वारा अनुमोदित

UPT®

अल्टीमेट परफॉरमेंस
तकनीक द्वारा तैयार

तकनीक
स्पेन की



KRISHI RASAYAN EXPORTS PVT. LTD.



Technology from

ALGA ENERGY
Spain



अन्नदाता का साथ किसान का विकास

अन्नदाता

जिंकेटेड एन.पी.के. (20:20:00:13)
सल्फर और जिंक की ताकत
ज्यादा उपज और कम लागत

अन्नदाता जिबो

अन्नदाता जिबो का वादा
मिट्टी जानकार और उपज भी ज्यादा

OSTWAL

जिंक 0.5%
सल्फर 20%
फॉस्फोरस 20%
नाइट्रोजन 13%



फॉस्फोरस 16%
बोरॉन 0.2%
जिंक 0.5%
सल्फर 11%
कैल्शियम 19%

ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज

रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-0-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)

उत्पादक: ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा)। कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मेघनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (रजौवा एवं बण्डा - सागर)

मौसम आधारित फसल बीमा योजना होगी लागू

केसर, सेब और बादाम को मिलेगा टिशू कल्चर

श्रीनगर। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने श्रीनगर में आयोजित एक उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की। उन्होंने जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के साथ राज्य की कृषि, हॉर्टिकल्चर और ग्रामीण विकास योजनाओं पर विस्तार से चर्चा के साथ कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की गईं।

बैठक के बाद श्री चौहान शिवराज सिंह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए बताया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत जम्मू-कश्मीर में सेब, बादाम, अखरोट जैसी बागवानी फसलों को शामिल करने के लिए मौसम आधारित फसल बीमा योजना लागू की जाएगी। यह किसानों को प्राकृतिक आपदाओं और जलवायु जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करेगा। उन्होंने बताया कि एकीकृत बागवानी विकास



मिशन के तहत श्रीनगर में 150 करोड़ रुपये की लागत से एक आधुनिक क्लोन प्लांट सेंटर स्थापित किया जाएगा। इस सेंटर में किसानों को वायरस-रहित, गुणवत्ता युक्त रोपण सामग्री उपलब्ध कराई

जाएगी, जिससे उत्पादन क्षमता और आय में बढ़ोतरी होगी। राज्य की विशिष्ट पहचान केसर उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए केंद्र सरकार यहां टिशू कल्चर प्रयोगशाला और आधुनिक नर्सरी स्थापित करेगी। इससे केसर की उत्पादकता और निर्यात क्षमता को मजबूती मिलेगी।

श्री चौहान ने बताया कि कठुआ, बारामूला और अनंतनाग में क्वालिटी कंट्रोल और सॉयल टेस्टिंग लैब्स स्थापित की जाएंगी, जो किसानों को मिट्टी की उर्वरता, पोषक तत्व प्रबंधन और उन्नत कृषि पद्धतियों की दिशा में मार्गदर्शन करेंगी।

खरीफ विशेषांक के प्रमुख आकर्षण



- पोषक तत्व प्रबंधन से पाएं चमकदार धान
- खरीफ फसलों में करें खरपतवार प्रबंधन
- सोयाबीन की उन्नत खेती
- श्री विधि द्वारा धान का अधिक उत्पादन
- खरीफ मेंफायदेमंद मक्का
- अरहर उत्पादन की उन्नत खेती



- 5
- 6
- 7
- 9
- 10
- 11

Coromandel

अब डीएपी की बोरी करो कम और बाद में दो

ग्रोमोर नैनो डीएपी का दम।

GROMOR
nano
DAP
MADE IN INDIA
MADE FOR THE WORLD

Net Quantity: 1 Liter

बेहतर अवशोषण

संतुलित पोषण

मिट्टी का बेहतर स्वास्थ्य

ज्यादा लाभ

आसान उपयोग

उन्नत तकनीक

BASF
We create chemistry

बीएसएफ इम्यूनिट™

फसल करे टेकऑफ

- तनी की चकली
- रिंग कलम
- अर्धकुंछली इल्ली (सेमीनूपर)
- काली इल्ली (स्पोरोप्टेरा)

- प्रारंभिक कीटों से सुरक्षा का आश्वासन
- जटिल कीट चुनौतियों का समाधान
- उत्कृष्ट फसल स्थापना

120

गुआई के 15-20 दिन बाद

1. मिने, उमर, बीजकाल में इमिडोल अपने के डीएपी के साथ ही फसल की सिंचित की जाती है। इमिडोल को अलग करके सिंचित की जा सकती है।
2. इमिडोल को अलग करके सिंचित करने से फसल में अमोनिया के अभाव से फसल की उर्वरता में गिरावट आ सकती है।

3800 करोड़ रुपए के निवेश से फ्रोजन आलू उत्पाद इकाई का प्रस्ताव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से मिले मैकेन फूड्स के पदाधिकारी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में उद्योग और रोजगार वर्ष-2025 औद्योगिक विकास की तीव्र संभावनाओं को साकार करने का वर्ष है। राज्य सरकार के प्रयासों से विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर निवेश प्रस्ताव मिल रहे हैं। निवेशकों को औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए भूमि सहित नीतियों के अंतर्गत सभी आवश्यक सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

डॉ. यादव समत्व भवन मुख्यमंत्री निवास में मैकेन फूड्स के रीजनल प्रेसिडेंट पियरे डैनेट एवं प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों से चर्चा कर रहे थे। मैकेन फूड्स के श्री डैनेट ने बताया कि मध्यप्रदेश में किसानों को कांटेक्ट फार्मिंग के माध्यम से स्थायी बाजार बेहतर मूल्य और उन्नत कृषि तकनीक का लाभ दिलवाने के लिए 3800 करोड़ रुपए निवेश का प्रस्ताव दिया गया है। प्रथम चरण में 1800 करोड़ रुपए का निवेश किया जाएगा और इस निवेश



के फलस्वरूप 6300 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से रोजगार प्राप्त होगा। वैस्विक कंपनी मैकेन फूड्स भारत में मुख्य रूप से फ्रोजन आलू उत्पादों जैसे फ्रेंच फ्राइज, आलू टिक्की और स्नैक आइटम बनाती है। कनाडा में स्थापित यह कंपनी भारत में वर्ष 2007 से खाद्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वर्तमान में गुजरात के मेहसाणा में कंपनी किसानों से आलू खरीद कर अत्याधुनिक उत्पादन इकाई के माध्यम से विभिन्न खाद्य उत्पाद निर्मित कर रही है। चर्चा के दौरान प्रमुख सचिव औद्योगिक नीति एवं निवेश संवर्धन राघवेंद्र कुमार सिंह और आयुक्त जनसम्पर्क डॉ. सुदाम खाड़े उपस्थित थे।

सहकारी समितियों का सुदृढ़ होना आवश्यक: श्री सारंग

समन्वय भवन में राज्य स्तरीय सहकारी कार्यशाला

भोपाल। सहकारिता मंत्री विश्वास सारंग ने कहा है कि पारदर्शिता, ईमानदारी और नवाचार के जरिए सहकारी आंदोलन को मजबूत किया जा सकता है। इसके लिए पूरी सहकारिता की टीम कृत-संकल्पित होकर काम करें। श्री सारंग समन्वय भवन में अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के उपलक्ष्य में सहकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के विभिन्न पहलुओं पर राज्य स्तरीय सहकारी कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे।

श्री सारंग ने कहा कि सहकारी आंदोलन को मजबूत करने के लिए पैक्स का सुदृढ़ीकरण करना आवश्यक है। इसके लिए संभागीय और जिला अधिकारी अधीनस्थ पैक्स का निरीक्षण करें। मुख्यालय के अधिकारियों को भी संभावित जिम्मेदारी दी जाए, जो उनके अधीनस्थों की समस्या एवं सुझावों पर ध्यान दें। उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न करने में पैक्स की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। श्री सारंग ने कहा कि सेल्फ हेल्प ग्रुप सहकारिता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा है कि सहकारिता के माध्यम से ही गरीबों के घर में खुशी लायी जा सकती है। श्री सारंग ने कहा



कि हाल ही में केन्द्र सरकार को दिए गए प्रेजेंटेशन में सबसे अच्छा प्रेजेंटेशन मध्यप्रदेश का रहा। इसके लिए उन्होंने पूरी टीम को बधाई दी। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश की नवाचार विंग और सीपीपीपी मॉडल को भूरी-भूरी प्रशंसा मिली है। यही नहीं कंप्यूटराइजेशन की दिशा में भी मध्यप्रदेश देश में नंबर एक पर रहा है, जो सराहनीय है।

अपर मुख्य सचिव अशोक वर्णवाल ने कहा कि हर पैक्स को केडिट के अलावा तीन एक्टिविटी करना जरूरी है। स्थानीय पृष्ठभूमि में अवसरों को तलाश कर बिजनेस बढ़ाना होगा। बिजनेस सोसायटियों के सदस्यों के खाते हमारे यहां होना चाहिये। साथ ही उनके लिये माइक्रो एटीएम की व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। इस मौके पर सहकारिता आयुक्त मनोज पुष्प सहित सहकारी समितियों के प्रबंधक मौजूद रहे।

खरीफ फसलों की बुवाई 35 प्रतिशत पूरी सोयाबीन की बुवाई 27 लाख हेक्टेयर में सम्पन्न

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। प्रदेश में किसानों द्वारा खरीफ फसलों की बुवाई शीघ्रता से की जा रही है। इस साल मानसून का आगमन जल्दी होने एवं प्रदेश के सभी क्षेत्रों में अच्छी बारिश से खरीफ बुवाई जल्दी शुरू हो गई है। किसान कल्याण तथा कृषि विकास संचालनालय से प्राप्त जानकारी अनुसार अब तक खरीफ फसलों की बुवाई 35 प्रतिशत से अधिक की जा चुकी है। चालू खरीफ में निर्धारित बुवाई लक्ष्य 149.60 लाख हेक्टेयर के विरुद्ध 50.54 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है।

गत वर्ष समान अवधि में यह बुवाई 49.07 लाख हेक्टेयर में हुई थी। सबसे अधिक 29.74 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन बोया गया है। पिछले साल अब तक सोयाबीन की बुवाई 26.04 लाख हेक्टेयर में हुई थी। इस साल 54.01 लाख हेक्टेयर में



प्रमुख खरीफ फसलों की बुवाई				
फसल	सामान्य क्षेत्र	लक्ष्य 2025	पिछले साल की बोनी	बोनी 2025
धान	27.11	35.83	5.05	1.85
ज्वार	1.57	1.37	0.22	0.22
मक्का	13.57	23.20	10.29	10.46
बाजरा	3.26	4.02	0.08	0.58
कोदो	1.15	2.11	0.05	0.15
तुअर	4.04	3.81	0.94	0.44
उड़द	16.86	7.78	0.58	0.70
मूंग	1.32	1.25	0.16	0.12
सोयाबीन	57.40	54.01	26.04	29.74
मूंगफली	2.39	6.33	0.39	1.74
तिल	3.58	3.71	0.09	0.27
कपास	5.83	5.80	5.01	4.26
खरीफ योग	138.52	149.60	49.07	50.54
(क्षेत्र- लाख हेक्टेयर में)				

सोयाबीन की बुवाई प्रस्तावित है। खरीफ की दूसरी सबसे बड़ी खाद्यान्न फसल धान की बुवाई प्रारंभिक अवस्था में है। धान की बुवाई 1.85 लाख हेक्टेयर में की गई है जबकि गत वर्ष अब तक 5.05 लाख हेक्टेयर में धान की बुवाई हुई

थी। चालू खरीफ में 35.83 लाख हेक्टेयर में धान की बुवाई एवं रोपाई प्रस्तावित है।

मक्का की बुवाई 10.46 लाख हेक्टेयर में हुई है। पिछले साल समान अवधि में 10.29 लाख हेक्टेयर में यह बुवाई हुई थी। इस वर्ष 23.20 लाख हेक्टेयर में मक्का बुवाई का लक्ष्य रखा गया है। कपास की बुवाई 4.26 लाख हेक्टेयर में हुई है जो कि समान अवधि में पिछले साल की बुवाई 5.01 लाख हेक्टेयर से कम है। कपास बुवाई का लक्ष्य इस साल 5.80 लाख हेक्टेयर प्रस्तावित है।

खरीफ की अन्य फसलों में मूंगफली 1.74 लाख हेक्टेयर, ज्वार 22 हजार हेक्टेयर, बाजरा 58 हजार हेक्टेयर, कोदो इत्यादि 15 हजार हेक्टेयर, तुअर 44 हजार हेक्टेयर, उड़द 70 हजार हेक्टेयर, मूंग 12 हजार हेक्टेयर एवं तिल 27 हजार हेक्टेयर में बोयी गई है।

हेमंत खंडेलवाल बने मध्यप्रदेश भाजपा प्रदेश अध्यक्ष



भोपाल। प्रदेश भाजपा कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में हेमंत खंडेलवाल ने मध्य प्रदेश भाजपा के निर्विरोध नए प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला। केंद्रीय पर्यवेक्षक एवं केंद्रीय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान की उपस्थिति में खंडेलवाल के नाम पर सर्वसम्मति से मुहर लगाई गई। खंडेलवाल का चयन निर्विरोध रहा। प्रदेश अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी मिलने पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और वी. डी. शर्मा ने खंडेलवाल को मिठाई खिलाकर शुभकामनाएं दीं। पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं ने इस मौके पर खंडेलवाल का गर्मजोशी से स्वागत किया और उनके नेतृत्व में संगठन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की उम्मीद जताई।

विदिशा जिले में



कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री कृष्णाकांत सिंघारिया

श्रीराम नगर, पशु चिकित्सा के सामने गली नं. 4, विदिशा जिला-विदिशा (म.प्र.)
मो. 8120303100

श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय
हेड एग्रोनॉमिस्ट
आरएमपीसीएल, इंदौर (म.प्र.)

ख रीफ खाद्यान्न फसलों में धान का प्रमुख स्थान है। उत्पादन की दृष्टि से मध्यप्रदेश धान के मामले में अभी पीछे है। किसानों द्वारा धान की खेती में पौषक तत्व आधारित उर्वरकों का उपयोग नहीं करने से अपेक्षाकृत उत्पादन कम मिलता है। धान का उत्पादन कम मिलने से किसानों को हर साल घाटा हो रहा है। धान की खेती में अन्य फसलों की अपेक्षा उत्पादन लागत अधिक आती है इसलिये धान की उत्पादकता बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है।

कैसे बढ़ेगा धान का उत्पादन ?

अन्य फसलों की तरह धान में भी 16 पौषक तत्वों की जरूरत होती है। जिसमें हमें प्रकृति से कार्बन, हाइड्रोजन, आक्सीजन मुफ्त में मिलते हैं। शेष 13 तत्वों में एनपीके उर्वरक मुख्य श्रेणी के प्राथमिक तत्व हैं। जिन्हें निश्चित रूप से देना पड़ता है। द्वितीयक पौषक तत्वों में कैल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फर, कॉपर, आयरन, मालीब्डेनम तत्व आते हैं। किसान भाई प्रायः धान में डीएपी एवं यूरिया ही प्रयोग करते हैं जिससे फसल को सिर्फ फास्फोरस एवं नाइट्रोजन ही मिल पाता है। पोटाश का प्रयोग किसान बिल्कुल नहीं करते, यह सर्वथा गलत है। धान से सर्वाधिक उत्पादन पाने के लिये 48 किलो नाइट्रोजन, 24 किलो फास्फोरस एवं 16 किलो पोटाश प्रति एकड़ प्रयोग करना चाहिये।

“ महावीरा जिरोन पावर प्लस सिर्फ खाद ही नहीं बल्कि किसानों के विश्वास का पर्याय भी बन गया है। इससे फसलों की गुणवत्तायुक्त उत्पादन वृद्धि तो होती ही है साथ ही जमीन की सेहत का ख्याल भी छिपा है जो अगली फसल के लिये भी लाभकारी है। इस खाद को धान की फसल के लिये कृषि वैज्ञानिकों ने सर्वश्रेष्ठ बताया है। महावीरा जिरोन पावर प्लस छः पौषक तत्वों से भरपूर है जो धान के लिये रामबाण है। तीन बोरी प्रति एकड़ धान के लिये अनुशंसित है। फसल के हर पड़ाव पर मैग्नीशियम, जिंक, बोरोन से धान की फसल में दिखेगा असली फर्क। ”



नया तरीका, नई उमंग,
मेरी फसलें बढ़ेंगी ZIRON के संग



पौषक तत्व प्रबंधन से पाएं चमकदार धान महावीरा जिरोन पावर प्लस धान के पौषक तत्व प्रबंधन के लिये सर्वोत्तम

- गुणवत्ता का दूसरा नाम जांचा, परखा महावीरा जिरोन पावर प्लस
- तीन बोरी यानि 150 किलोग्राम प्रति एकड़ अनुशंसित।
- छः पौषक तत्वों कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर, जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम से भरपूर।
- धान में सम्पूर्ण पौषक तत्व प्रबंधन के लिये सर्वश्रेष्ठ खाद।
- चमकदार एवं खुशबूयुक्त धान पैदा करने में सबसे आगे।
- सर्वाधिक गुणवत्तायुक्त उत्पादन के साथ मिट्टी की सेहत का भी रखे ख्याल।
- 50 से 60 हजार रुपये प्रति एकड़ धान की खेती से कमाएं

पौषक तत्वों की आपूर्ति कैसे करें ?

उर्वरक उद्योग की अग्रणी कंपनी एवं किसानों की हित चिंतक आरएम फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स प्रायवेट लिमिटेड ने सम्पूर्ण पौषक तत्व आधारित खाद महावीरा जिरोन पावर प्लस उपलब्ध करवाया है। इसमें छः पौषक तत्व कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर, जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम का अद्भुत मिश्रण है जो धान की फसल को चमकदार एवं गुणवत्तायुक्त बनाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। महावीरा जिरोन पावर प्लस की तीन बोरी यानि 150 किलोग्राम प्रति एकड़ बुवाई एवं रोपाई के समय प्रयोग करने से 25 से 30 क्विंटल धान प्रति एकड़ आसानी से पैदा किया जा सकता है।



- महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध 16 प्रतिशत फास्फोरस जड़ों की वृद्धि के लिये महत्वपूर्ण है।
- 19 प्रतिशत कैल्शियम पौधे के अंगों की रचना के लिये तथा पौधों को मजबूती प्रदान करता है।
- महावीरा जिरोन पावर प्लस में मौजूद 11 प्रतिशत सल्फर धान में क्लोरोफिल की मात्रा को बढ़ाने के साथ-साथ रोगों से भी रक्षा करता है।
- 0.5 प्रतिशत जिंक जो कि धान के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्लोरोफिल उत्पाद

में सहायक तथा प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया को बढ़ाता है।

- 0.20 प्रतिशत बोरोन फूल एवं फल लगने की प्रक्रिया को तेज करता है एवं नवीन अंगों के निर्माण में सहायक है।
- मैग्नीशियम पौधे को हरा-भरा रखने में प्रमुख भूमिका निभाता है। महावीरा जिरोन पावर प्लस का उपयोग जिन किसानों ने धान की रोपा पद्धति एवं छिटकवां पद्धति (सीधी बुवाई) में किया है सभी को सर्वाधिक उत्पादन मिला है। कंपनी का महावीरा जिरोन पावर प्लस मध्यप्रदेश के सभी धान उत्पादक क्षेत्रों में कंपनी के अधिकृत विक्रेताओं के पास उपलब्ध है।



महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध पौषक तत्व

घटक	मात्रा (न्यूनतम प्रति.)
फास्फोरस	16 प्रतिशत
जिंक	0.5 प्रतिशत
बोरोन	0.20 प्रतिशत
सल्फर	11 प्रतिशत
कैल्शियम	19 प्रतिशत
मैग्नीशियम	0.5 प्रतिशत

महावीरा जिरोन की कहानी- कृषक की जुबानी

महावीरा जिरोन धान के लिये सर्वोत्तम खाद



भोपाल। ग्राम भैसाखेड़ा, जिला भोपाल निवासी कृषक सरदार सिंह ने बताया कि मैंने अपने खेत में धान की फसल लगाई थी। जिसमें

महावीरा जिरोन का प्रयोग किया, जिससे मुझे भरपूर उत्पादन मिला। उन्होंने बताया कि मुझे महावीरा जिरोन की जानकारी डीलर के द्वारा प्राप्त हुई। मैंने उनकी सलाह अनुसार ही धान की फसल में महावीरा जिरोन का उपयोग किया जिसका परिणाम बहुत ही अच्छा मिला। इसके लिये मैं महावीरा जिरोन निर्माता कंपनी को धन्यवाद देता हूँ और आगे भी मैं महावीरा जिरोन का प्रयोग करूंगा। साथ ही अन्य किसानों को भी महावीरा जिरोन के प्रयोग की सलाह देता हूँ। श्री सिंह ने बताया कि महावीरा जिरोन के प्रयोग से धान में कंसों की शाखा प्रति पौध 12 से 15 तक रही। बालियां भी पहले की अपेक्षा ज्यादा बड़ी रही। धान का उत्पादन पहली बार 25 क्विंटल प्रति एकड़ मिला।

साप्ताहिक सुविचार

धर्म, व्यक्ति एवं समाज, दोनों के लिये आवश्यक है।

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

खरीफ उत्पादकता वृद्धि आवश्यक

खरीफ मौसम की शुरुआत हो चुकी है। इस साल मानसून की मध्यप्रदेश में आमद हो चुकी है। खरगौन के रास्ते महाराष्ट्र की सीमा से इस बार मानसून का प्रवेश हुआ। खरीफ फसलों की बुवाई की दृष्टि से मानसून अनुकूल एवं समय पर है। मध्यप्रदेश राज्य विविध फसलों की विविधता वाला राज्य है जहां पर खरीफ मौसम में अनेक लाभकारी फसलें किसानों द्वारा बोयी जाती हैं। निमाड़ क्षेत्र में जहां सफेद सोने की खेती की जाती है वहीं मालवा एवं मध्य क्षेत्र पीले सोने की खेती के लिये विख्यात है। प्रदेश का पूर्वी क्षेत्र विशेषकर खरीफ में धान की खेती के लिये जाना जाता है।

कृषक दूत
सम्पादकीय



साथ ही इस क्षेत्र में मूंग, उड़द एवं तिल

की अपनी अलग विशेषता है। महाकौशल क्षेत्र धान एवं अन्य विविधताओं से परिपूर्ण है। ग्वालियर एवं चम्बल संभाग के किसान खरीफ में ज्वार एवं बाजरा को प्रमुखता देते हैं। प्रदेश भर में खरीफ मौसम में 149 लाख हेक्टेयर के लगभग फसलें बोयी जाती हैं जिसमें सबसे अधिक योगदान 55 लाख हेक्टेयर सोयाबीन का रहता है। धान का क्षेत्र अब बढ़कर 36 लाख हेक्टेयर हो गया है। उड़द एवं मक्का का क्षेत्र भी 15-20 लाख हेक्टेयर पार कर गया है। प्रदेश का किसान मेहनती होने के बावजूद आर्थिक रूप से अब तक सक्षमता नहीं पा सका। उसका प्रमुख कारण है फसल उत्पादकता का कम होना। सभी फसलों की उत्पादकता राष्ट्रीय औसत से कम है। उत्पादन लागत दिनों-दिन बढ़ रही है जबकि उत्पादन स्थिर है। यही वजह है कि किसानों की खेती में लगातार घाटा हो रहा है। खरीफ उत्पादन बढ़ाने की किसानों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है। बारिश की फसल होने से इसमें कीट-रोगों का प्रकोप भी अधिक रहता है। पौध-संरक्षण के ऊपर ज्यादा खर्च करने के बावजूद अपेक्षित परिणाम किसानों को नहीं मिल पा रहा है। उत्पादन लागत कम करके उत्पादकता वृद्धि ही किसानों की नैया पार लगा सकती है। इसके लिये उन्नत किस्म के बीजों का उपयोग, संतुलित उर्वरक प्रयोग एवं आधुनिक किस्म के कृषि यंत्रों का उपयोग आवश्यक है। पौध-संरक्षण रसायनों की गुणवत्ता भी बेहतर होनी चाहिये। कृषि आदानों के आसमान छू रहे भाव को भी नियंत्रित करना जरूरी है। कृषि वैज्ञानिकों का किसानों से लगातार संवाद भी होना चाहिये जो अभी वर्तमान में नगण्य है। किसानों को फसल उत्पादन बढ़ाने के तरीके बताकर इस काम को आसान किया जा सकता है। वर्तमान में खरीफ फसलों की बुवाई का कार्य चल रहा है इसलिये उत्पादकता वृद्धि के सारे प्रयास शुरू किये जाने चाहिये। फसलों की बेहतर गुणवत्ता होने से बाजार भाव अच्छे मिलेंगे जिसकी किसानों को अत्यधिक आवश्यकता है।

खरीफ फसलों में करें खरपतवार प्रबंधन

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार, वैज्ञानिक डॉ. आर.के. प्रजापति, डॉ. यू.एस. धाकड़, डॉ. सतेन्द्र कुमार, डॉ. एस.के. जाटव एवं जयपाल छिगारहा द्वारा किसान भाइयों को इस समय उपयोगी सलाह देते हुये बताया गया कि इस समय लगातार बारिश हो रही है। अत्यधिक बारिश से मिट्टी में जलभराव हो सकता है, जिससे बाग-बगीचों के पौधों की जड़ें सड़ सकती हैं और सब्जियों की फसलें खराब हो सकती हैं। फफूंद लग सकती हैं और कीटों का प्रकोप बढ़ सकता है। बारिश से मिट्टी का कटाव भी हो सकता है जिससे पोषक तत्वों की कमी हो सकती है। फसलों में मिट्टी परीक्षण उपरान्त अनुसंशित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। दलहनी और तिलहनी फसलों में फास्फोरस की पूर्ति के लिए डी.ए.पी. की जगह सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करना चाहिए जिससे फसलों को फास्फोरस के साथ सल्फर और कैल्शियम भी प्राप्त हो जाता है। सबसे पहले जल निकासी की व्यवस्था करें ताकि खेत में पानी जमा न हो। इसके लिए मेड़ों को काटकर नालियां बनाई जा सकती हैं ताकि पानी आसानी से निकल जाए। कुछ फसलें अधिक पानी सहन कर सकती हैं जैसे कि धान। अगर लगातार बारिश हो रही है तो ऐसी फसलों का चुनाव करना बेहतर होगा। बारिश के मौसम में बुआई का समय थोड़ा आगे-पीछे हो सकता है। मौसम का पूर्वानुमान देखकर सही समय पर बुआई करें। बारिश के मौसम में बीज जल्दी खराब हो सकते हैं इसलिए बुआई से पहले बीजों को उपचारित करें।

फसल को फफूंदजनित बीमारियों से बचाने के लिए जैविक फफूंदनाशक दवा ट्राइकोडर्मा विरिडी 10 मिली या रासायनिक दवा वीटावैक्स पॉवर 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से बीजोपचार कर बुवाई करना चाहिए। वर्षा के तरीके को

समझकर बुवाई का समय तय करना चाहिए। विभिन्न प्रकार की फसलों को उगाकर मिट्टी की उर्वरता बनाए रखनी चाहिए। उन किस्मों का चयन करना चाहिए जो बारिश के प्रति सहनशील हों। उड़द की पीला मौजेक प्रतिरोधक किस्में- इंदिरा उड़द प्रथम, मुकुंदरा, प्रताप उड़द-1, प्रताप उड़द-9, आई.पी.यू. 13-1, कोटा उड़द-2, कोटा उड़द-3 आदि। सोयाबीन की उन्नत किस्में- जे.एस. 20-116, जे.एस. 20-34, जे.एस. 20-94, जे.एस. 20-98, राज सोया 18 आदि। तिल की उन्नत किस्में- टी.के.जी. 306, टी.के.जी. 308, जी.टी. 4, जी.टी. 6, मूंगफली की उन्नत किस्में-जी.जे.जी. 32,

किसान भाइयों को सम सामयिक कृषि तकनीकी सलाह

टी.सी.जी.एस. 1694, लेपाक्षी, जे.एल. 501, जे.जी.एन. 3, धान की उन्नत किस्में- जे.आर. 201, जे.आर. 81, जे.आर. 345, पूसा सुगंध 4, पूसा सुगंध 3, एम.टी.यू. 1010 एवं अरहर की उन्नत किस्में- पूसा अरहर 16, पूसा 33, टी.जे.टी. 501, राजीव लोचन आदि। उन्नत किस्मों की उपलब्धता हेतु राष्ट्रीय बीज निगम, निवाड़ी एवं म.प्र. राज्य बीज प्रक्रिया 4 नं. फार्म, कुण्डेश्वर रोड, टीकमगढ़ सम्पर्क कर समय से बीज खरीदने का कार्य करें। जैविक खाद का उपयोग करने से मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है और फसलें मजबूत होती हैं। किसान भाई बरसात के समय खुले आसमान में जाने से बचें, पशुओं को भी खुले में न रखें क्योंकि बिजली गिरने का खतरा बना रहता है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार आगामी दिनों के दौरान हल्की से मध्यम वर्षा तथा आसमान में बादल छाये रहने की संभावना को देखते हुए किसान भाई खरीफ फसलों की तैयारी

करें तथा फसलों की बुआई का कार्य वर्षा समाप्त होने पर ही करें।

किसान भाइयों को एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि प्रति वर्ष प्रत्येक खेत में फसलें अदल-बदल कर बोना चाहिए। खरीफ की फसलों जैसे उड़द, सोयाबीन, मूंगफली, तिल, मूंग तथा मक्का आदि की बुवाई का कार्य कतारों में करना चाहिए जिसके लिए कूड़-नाली विधि या चौड़ी क्यारी नाली विधि मशीन का प्रयोग करें। अभी खड़ी फसलें विशेषकर सब्जियों तथा फलदार वृक्षों में दवा का छिड़काव न करें। खरीफ प्याज के नर्सरी की पौध की देखभाल करें तथा नर्सरी में पानी जमा ना होने दें। मिर्च तथा टमाटर की फसल में विषाणु रोग का प्रकोप देखा जा रहा है। किसान भाई फसल का निरीक्षण करें तथा ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दें। कद्दूवर्गीय सब्जियों में हानिकारक कीटों-बिमारियों की निगरानी करते रहें तथा इनके बेलों को भूमि से ऊपर चढ़ाने की व्यवस्था करें ताकि वर्षा से सब्जियों की लताओं को गलने से बचाया जा सके। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपने खेतों में अदरक, अरबी की बुवाई का कार्य शुरू करें साथ ही उन्नत किस्मों का चयन करें। नये फलबाग लगाने के लिये पूर्व में खोदे गये गड्ढों में पौधे लगाएं।

फलबागों में गहरी गुड़ाई कर पेड़ों के चारों तरफ थालें बनायें तथा जल-निकासी की पर्याप्त व्यवस्था करें। वर्षा का गंदा पानी पीने से पशुओं के पेट में कीड़ों के अतिरिक्त कुछ छूट के रोग भी हो जाते हैं। उन्हें पशु चिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक दवाई 15-20 दिन में एक बार अवश्य पिलाएं।

अनमोल वचन

सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मित्र बनाए जाते हैं।

- कौटिल्य अर्थशास्त्र

अवैधानिक मत्स्याखेट पर प्रशासन की कार्यवाही

नर्मदापुरम। जिले में बंद ऋतु के दौरान मछलियों के प्रजनन काल में अवैधानिक मत्स्याखेट, विक्रय एवं परिवहन पर पूर्ण प्रतिबंध के निर्देशों के पालन को लेकर प्रशासन द्वारा सख्त कार्रवाई की जा रही है। इस संबंध में कलेक्टर सोनिया मीना के निर्देशानुसार मछली पालन विभाग के गठित दल ने गत दिवस इटारसी मछली बाजार का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान बाजार में अवैधानिक रूप से रखी गई लगभग 60 किलो मछली को

जस कर नीलामी की कार्रवाई की गई। इस दौरान आसपास के सभी मत्स्य विक्रेताओं को जारी अधिसूचना के संबंध में अवगत कराया गया कि बंद ऋतु (16 जून से 15 अगस्त) के दौरान मछलियों के प्रजनन काल में किसी भी प्रकार का मत्स्याखेट, मत्स्य विक्रय एवं परिवहन दंडनीय अपराध है। अधिसूचना के उल्लंघन की दशा में मध्यप्रदेश मत्स्य क्षेत्र अधिनियम 1981 की धारा 5 के अंतर्गत कठोर कार्रवाई की जाएगी।

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

आषाढ़ शुक्ल/कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् 2082 ईस्वी सन् 2025

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
08 जुलाई 25	मंगलवार	आषाढ़ शुक्ल-13	
09 जुलाई 25	बुधवार	आषाढ़ शुक्ल-14	
10 जुलाई 25	गुरुवार	आषाढ़ शुक्ल-15	गुरु पूर्णिमा
11 जुलाई 25	शुक्रवार	श्रावण कृष्ण-01	
12 जुलाई 25	शनिवार	श्रावण कृष्ण-02	
13 जुलाई 25	रविवार	श्रावण कृष्ण-03	पंचक 7.32 रात से
14 जुलाई 25	सोमवार	श्रावण कृष्ण-04	पंचक, श्रावण सोमवार
15 जुलाई 25	मंगलवार	श्रावण कृष्ण-05	पंचक
16 जुलाई 25	बुधवार	श्रावण कृष्ण-06	पंचक
17 जुलाई 25	गुरुवार	श्रावण कृष्ण-07	पंचक 3.13 रात तक
18 जुलाई 25	शुक्रवार	श्रावण कृष्ण-08	
19 जुलाई 25	शनिवार	श्रावण कृष्ण-09	
20 जुलाई 25	रविवार	श्रावण कृष्ण-10	
21 जुलाई 25	सोमवार	श्रावण कृष्ण-11 एकादशी, द्वितीय श्रावण सो.	

- संदीप कुमार शर्मा
 - डॉ. ब्रजेश कुमार तिवारी
 - डॉ. संजय सिंह
 - डॉ. अजय कुमार पांडेय
- जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)

सो याबीन विश्व की सबसे महत्वपूर्ण तिलहनी एवं ग्रंथिकुल फसल है। इसने देश की खाद्य तेल आवश्यकता की पूर्ति करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए सोया-खली के विदेशों में निर्यात से प्रतिवर्ष लगभग 8000 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त कर देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करती है।

इस फसल की व्यावसायिक खेती वर्तमान में मुख्य रूप से मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र राजस्थान, कर्नाटक एवं आंध्रप्रदेश में की जाती है। इसका पीत क्रांति में भी विशेष योगदान रहा है। सोयाबीन कम अंतराल (85-100 दिन) की होने के कारण फसल प्रणाली में अच्छी तरह समाहित हो जाती है। ग्रंथिकुल की फसल होने के कारण 60-100 कि.ग्रा./हे. की दर से वातावरण की नत्रजन को मृदा में स्थिर करती है। सोयाबीन फसल के निरंतर एवं अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु फसल प्रबंधन की निम्नलिखित अनुशंसाओं को अपनाने की सलाह इस प्रकाशन के माध्यम से दी जाती है:-

किस्मों का चयन

सोयाबीन के सतत् उत्पादन में टिकाउपन लाने के लिए यह आवश्यक है कि हमेशा 3-4 किस्मों की खेती की जाए। क्षेत्रवार अनुशंसित सोयाबीन की किस्मों में से अपने क्षेत्र के लिए उपयुक्त 3-4 किस्मों का चयन कर बीज उपलब्धता बोवनी से पहले ही सुनिश्चित कर लें।

मध्य क्षेत्र के लिए अनुशंसित किस्में: जे.एस. 335, जे.एस. 93-05, जे.एस. 95-60, जे.एस. 97-52, जे.एस. 71-05, अहिल्या-3 (एन.आर.सी.7), अहिल्या -4 (एन.आर.सी. 37) आदि हैं।

मृदा: सोयाबीन की खेती सभी प्रकार की मृदाओं में (अति-अम्लीय, क्षारीय व रेतीली मृदाओं का छोड़कर) की जा सकती है। मृदा में अच्छा जल निकास होना चाहिए तथा जैविक कार्बन की मात्रा भी अच्छी होनी चाहिए।

खेत की तैयारी: फसल प्रबंधन के लिये 2 या 3 वर्ष में एक बार खेत की गहरी जुताई करना लाभकारी है। अतः गर्मी के मौसम में खेत की गहरी जुताई (30 से 45 से.मी.) के पश्चात विपरीत दिशा में बख्खर चलाएं एवं पाटा लगाकर खेत को समतल करें।

बोवनी का समय: सोयाबीन मानसून आधारित खरीफ मौसम की फसल होने के कारण इसकी बोवनी वर्षा के आगमन पर निर्भर होती है। मध्य प्रदेश में जून माह के अंतिम सप्ताह से जुलाई माह के प्रथम सप्ताह का समय इसकी बोवनी हेतु उपयुक्त है।

बीज अंकुरण परीक्षण: चयनित सोयाबीन की किस्मों के बीज का अंकुरण परीक्षण (न्यूनतम 70 प्रतिशत) कर इसकी गुणवत्ता बोवनी से पहले ही सुनिश्चित कर लें।

पौध संख्या एवं दूरी: अधिक उत्पादन



लेने हेतु सोयाबीन के एक हेक्टेयर क्षेत्र में लगभग 4-6 लाख पौधे होने चाहिए। अतः इसकी बोवनी हेतु कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. तथा पौधे से पौधे के बीच की दूरी 5 से.मी. अनुशंसित की गई है।

बीज दर: बीज का आकार एवं न्यूनतम 70 प्रतिशत अंकुरण के आधार पर सोयाबीन की विभिन्न किस्मों के लिए निम्नलिखित बीज दर अनुशंसित की गई है:-

छोटा दाना	:	60-65 कि.ग्रा./हे.
मध्यम दाना	:	70-75 कि.ग्रा./हे.
बड़ा दाना	:	80-85 कि.ग्रा./हे.

बोवनी का तरीका एवं गहराई: सोयाबीन की बोवनी कतारों में करना अधिक लाभप्रद है। अतः दूफन/तिफन/ट्रैक्टर चलित सीडड्रिल का उपयोग करते हुए बीज को 3 से.मी. तक की गहराई पर बोवनी करें। मानसून की देरी या बोवनी में विलम्ब होने की स्थिति में जल्दी पकने वाली किस्मों का उपयोग कर कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. तक घटाकर तथा बीज दर 25 प्रतिशत बढ़ाकर बोवनी करने की सलाह दी जाती है। बीज और खाद मिलाकर कभी भी बोवनी नहीं करें। तत्पश्चात् जल निकास हेतु खेत में उचित अंतराल पर नालिया बनाएं।

संतुलित पोषण प्रबंधन: सोयाबीन के एक हेक्टेयर क्षेत्र की फसल के लिए अनुशंसित 20:60:20:20 कि.ग्रा. नत्रजन:स्फुर:पोटाश: गंधक की आवश्यक पूर्ति हेतु बोवनी के समय विभिन्न उर्वरकों का प्रयोग करें।

बीजोपचार: बोवनी से पहले सोयाबीन के बीज को थाइरम एवं कार्बेन्डाजिम (2:1) 3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अथवा मिश्रित उत्पाद कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत+थाइरम 37.5 प्रतिशत (विटावेक्स पावर) 2-3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। इनके स्थान पर बीज उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा विरिडी (8-10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज) का भी उपयोग किया जा सकता है। तत्पश्चात् जैविक खाद (राइजोबियम एवं पीएसबी कल्चर 5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से) उपचारित करें एवं छाया में सुखाकर तुरन्त बोवनी हेतु उपयोग करना चाहिए।

अन्तरवर्ती फसल: अन्तरवर्ती फसल प्रणाली में भी सोयाबीन की काश्त अधिक लाभकारी है। असिंचित क्षेत्रों में सोयाबीन, अरहर (जवाहर -3, आईसीपीएल- 87119 एवं 88039) की खेती करें तथा सिंचित क्षेत्रों में सोयाबीन के साथ मक्का/ज्वार/कपास आदि उपयुक्त फसलों की काश्त करें। इसके लिये 4:2 के अनुपात में सोयाबीन व अंतरवर्ती फसल को 30 सें.मी. की कतारों पर बोवनी करें। फल बागों के बीच की खाली जगह में भी

सोयाबीन की उन्नत खेती

सोयाबीन की खेती की जा सकती है।

अन्तः शस्यकर्षण एवं खरपतवार प्रबंधन: सोयाबीन की फसल का बोवनी से 45 दिनों तक ही खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। यह कार्य हाथ से निंदाई/अन्तः सस्यकर्षण (डोरा/कुलपा)/खरपरवारनाशकों के उपयोग से संभव है। अतः यह सलाह दी जाती है कि कृषकों की सुविधानुसार उपरोक्त विधियों में से किसी एक का चुनाव कर खरपरवार प्रबंधन करें। 25 से अधिक दिन की फसल में डोरा/कुलपा चलाना फसल के लिए नुकसानदेह हो सकता है।

जल प्रबंधन: पौध फूल एव दाना भरने की अवस्थाएं मृदा नमी के लिए क्रांतिक अवस्थाएं होने के कारण सूखे की स्थिति में इन अवस्थाओं में सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। बीबीएफ/फर्ब सीड ड्रिल द्वारा बोवनी करने पर सूखा एवं अधिक वर्षा से होने वाली हानि को

कम किया जा सकता है।

कटाई एवं गहाई: फलियों का हरा रंग बदलने या पूर्णतया समाप्त होने पर यह मान ले कि फलियां परिपक्व हो चुकी हैं। इस अवस्था में सोयाबीन की कटाई करनी चाहिए। कटी हुई फसल को 2-3 दिन धूप में सुखाकर थ्रेशर से धीमी गति (300-400 आर.पी.एम.) पर गहाई करनी चाहिए एवं इस बात की सावधानी रखें कि गहाई के समय बीज के छिलके को क्षति न हो।

भण्डारण: गहाई के बाद बीज का धूप में अच्छे से सुखाकर भण्डारण करना चाहिए। भण्डार गृह ठंडा, नमी रहित व हवादार होना चाहिए। यहां यह भी सावधानी रखें कि 4 से अधिक बोरियों को एक के ऊपर एक न रखें। बीज की बोरियों का ऊंचाई से नहीं पटकना चाहिए। इससे बीज की अंकुरण क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

किसान भाईयों...

सुपर नहीं 'खेतान' मांगिए

तिलहनी, दलहनी सहित सभी फसलों में चमत्कारिक परिणाम सबसे ज्यादा तत्वों की आपूर्ति करने वाला

K9 सुपर जिंक सुपर बोरॉन सुपर यूरिया सुपर

उपज बढ़ाने का सुपर फॉर्मूला

K खेतान K9+

सिंगल सुपर फॉस्फेट के साथ जिंक-बोरॉन-मैग्निशियम (दानेदार)

खेतान इसलिए - मुनाफा निकालिए

खेतान केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर्स लि.

युनिट - निमरानी (म.प्र.) - झांसी एवं खान मलवा, जिला फतेहपुर (उ.प्र.) - धीनवा (राज.) - राजनांदगाव (छ.ग.) - बदेज (भरुच, गुज.)

फोन: 0731-4200748, 4753666

किसान हित में हमारा हित निहित है

● राघव पटेल

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

सो

याबीन खरीफ ऋतु की एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है, जो भारत में खाद्य तेल और पशु चारे का प्रमुख स्रोत है। इसकी आरंभिक वृद्धि धीमी होती है और यह खरपतवारों के प्रति अधिक संवेदनशील होती है। यदि खरपतवारों को प्रारंभिक अवस्था में नियंत्रित न किया जाए, तो वे पोषक तत्व, नमी, स्थान और प्रकाश के लिए फसल से प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे उपज में 30 से 50 प्रतिशत तक की गिरावट हो सकती है।

प्रमुख खरपतवार

सोयाबीन फसल में पाए जाने वाले खरपतवारों को तीन प्रमुख वर्गों में बाँटा जा सकता है-

वर्ग	सामान्य नाम	वैज्ञानिक नाम
घास वर्ग	साँवा, दूब, मोंटा	Echinochloa spp., Cynodon dactylon
चौड़ी पत्ती	चोलाई, लाल भिंडी, बोखना	Amaranthus spp., Trianthema spp., Commelina benghalensis
सेज वर्ग	मोथा, मदारी	Cyperus rotundus, Cyperus iria



इन खरपतवारों का प्रभावशाली नियंत्रण फसल की स्वस्थ वृद्धि और अधिक उत्पादन के लिए आवश्यक है।

समेकित खरपतवार प्रबंधन

सांस्कृतिक उपाय

- समय पर और उचित दूरी पर बुवाई करना
- गर्मी की गहरी जुताई से खरपतवार बीजों का नाश
- स्वच्छ बीजों का प्रयोग और फसल चक्र अपनाना

यांत्रिक नियंत्रण

- हाथ से निराई या खरपतवार हटाने वाले औजार
- अंतराल में पावर वीडर या इंटरकल्टीवेटर का उपयोग
- निराई का उपयुक्त समय- बुवाई के 15-20 दिन बाद

लाभ

- खरपतवारों से प्रतिस्पर्धा कम होकर पौधों की बेहतर वृद्धि
- उपज और गुणवत्ता में वृद्धि
- कम श्रम की आवश्यकता



सोयाबीन फसल में खरपतवार नियंत्रण में यांत्रिक और रासायनिक विधियों की भूमिका

रासायनिक नियंत्रण

खरपतवारनाशी का प्रयोग एक सटीक, समयबद्ध और लागत कम करने वाला विकल्प है। उचित चयन एवं मात्रा से लाभ प्राप्त किया जा सकता है-

खरपतवारनाशी	मात्रा	प्रयोग समय	नियंत्रण
पेंडिमेथालिन 30% EC	3.3 लीटर/हे.	बुवाई के तुरंत बाद	सभी प्रकार के प्रारंभिक खरपतवार
Clorimuron ethyl 25% WP	9 ग्राम/हे.	20-25 दिन बाद (post-emergence)	चौड़ी पत्ती खरपतवारों के लिए प्रभावी
इमेजाथापीर 10% SL	1.0 लीटर/हे.	20-25 दिन बाद	चौड़ी पत्ती और सेज वर्ग
क्विजालोफॉप-पी-एथिल	50 ग्राम/हे.	20-25 दिन बाद	घास वर्ग खरपतवार

- उत्पादन लागत में कमी
 - खेत की स्वच्छता बनी रहती है
- निष्कर्ष

सोयाबीन की अधिक उपज प्राप्त करने के लिए समेकित खरपतवार नियंत्रण रणनीति को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। सांस्कृतिक, यांत्रिक और रासायनिक उपायों का संयोजन ही अधिक प्रभावी होता है। Clorimuron ethyl जैसे आधुनिक खरपतवारनाशियों का वैज्ञानिक उपयोग खरपतवार नियंत्रण में नई दिशा प्रदान करता है। यदि सही समय और विधि से इनका उपयोग किया जाए, तो सोयाबीन उत्पादन को नई ऊँचाई दी जा सकती है।

खेती का उत्पादन

बढ़ाकर कृषकों को समृद्ध करने के लिए

इफको नैनो उर्ध्वकों की वृहद श्रृंखला

इफको का है वादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा

1 लि.ली. नैनो जिंक प्रति लीटर पानी में अनुपात में घोल बनाकर 30-35 दिन की फसल अवस्था में पत्तियों पर छिड़काव करें।



नैनो यूरिया नैनो डीएपी
की मदद पर प्रति वादा
₹. 10000/-
का आकर्षक
दुर्घटना बीमा मुफ्त

4 लि.ली. नैनो यूरिया प्रति लीटर पानी में घोलकर प्रति छिड़काव 500 लि.ली. मात्रा का दो बार, 35-40 दिन एवं 55-60 दिन पर छिड़काव करें।

1 लि.ली. नैनो कॉपर प्रति लीटर पानी में अनुपात में घोल बनाकर 30-35 दिन की फसल अवस्था में पत्तियों पर छिड़काव करें।



नैनो यूरिया नैनो डीएपी
का उपयोग करने से
पारंपरिक उर्ध्वकों में 50 प्रतिशत
की कटौती की जा सकती है

नैनो डीएपी का प्रयोग बीज उपचार में 5 लि.ली. प्रति किलो बीज एवं जड़ उपचार में 5 लि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर करें। इसके पश्चात खड़ी फसल में 35-40 दिन में 4 लि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर पत्तियों पर छिड़काव करें।




इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड, मध्यप्रदेश



नमन गोल्ड मेडल से सम्मानित

रीवा। स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने खेलों भारत आयाम के अंतर्गत संभाग स्तरीय कूडो एवं मार्शल आर्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता में बालक-बालिकाओं के बीच विभिन्न आयु और भार वर्गों में मुकाबले हुए। इस कार्यक्रम में नमन सिंह पुत्र डॉ. तपन कुमार सिंह बाल भारती स्कूल रीवा में 8वीं कक्षा में अध्ययनरत 12 वर्ष की आयु में भाग लेकर अपने प्रतिद्वंद्वी को हराकर प्रथम स्थान के साथ गोल्ड मेडल प्राप्त किये। नमन के माता-पिता, दादा-दादी और समस्त कृषि कॉलोनी परिवार को गर्व की अनुभूति हुई। इस जीत के लिए बाल भारती स्कूल एवं कृषि महाविद्यालय रीवा के समस्त स्टाफ ने खुशी जताई और बधाई एवं शुभ कामनाएं दी।

● डॉ. कैलाश नारायण गुप्ता

● डॉ. शुभम मिश्रा

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

भा रत वर्ष में धान की फसल लगभग 44.6 मिलियन हेक्टेयर में की जाती है, जिसका प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन 3.0 टन है जबकि चीन में 30.5 मिलियन हेक्टेयर में उगायी जाती है जिसकी प्रति हेक्टेयर औसत उपज 6.2 टन प्रति हेक्टेयर है।

प्रायः उत्पादन करने में जो विधि प्रयोग में लाते हैं वह उतनी उत्पादन देने में सक्षम नहीं है। जितनी की आज प्रचलित उत्पादन तकनीक श्री विधि (एस.आर.आई) से प्राप्त कर सकते हैं। इसको 'सिस्टम आफ राइस इंटेसिफिकेशन' अथवा 'एस.आर.आई.' नाम से भी जाना जाता है। इस पद्धति का विकास विश्व में सर्वप्रथम फादर हेनरी डी लॉलेनि ने मैडागास्कर देश में किया था। इस पद्धति को अपनाने के दो प्रमुख उद्देश्य यह है कि धान के उत्पादन को बढ़ाया जाये और धान की जल मांग को कम किया जाये। विश्व के विभिन्न भागों में इस तकनीक को अपनाने से धान का उत्पादन दो से तीन गुना तक बढ़ा है। इस पद्धति द्वारा धान उगाने के लिए निम्न शस्य क्रियाएँ एवं सिद्धांत है।

शीघ्र रोपाई: धान को परंपरागत विधि से उगाने के लिए इसकी रोपाई 25-30 दिन पुरानी पौध से की जाती है जबकि धान सघनता पद्धति में पौध की उम्र समान्यतः 10-12 दिन अथवा अधिकतम 15 दिन पुरानी पौध की रोपाई खेत में लगाने के बीच कम से कम समय होना चाहिए। यानी पौध उखाड़ने के तुरंत बाद उसकी रोपाई करना आवश्यक है और पौध को उखाड़ते समय इसकी जड़ों को कोई क्षति नहीं पहुंचनी चाहिए। इस विधि से रोपाई करने से काफी संख्या में कल्ले निकलते हैं और मजबूत जड़ों का विकास होता है जो कि अधिक उत्पादन के लिए आवश्यक गुण है।

पौध संख्या एवं अंतरण: धान सघनता पद्धति में रोपाई के लिए विभिन्न परिस्थितियों में पंक्ति एवं पौधे से पौधे की दूरी 25 ग 25 सें.मी. रखते हैं। इस वर्गाकार रोपाई विधि में एक जगह पर एक ही पौध लगाया जाता है। इस विधि द्वारा रोपी गई पौध की जड़ों एवं कल्लों के अच्छे विकास के लिए पर्याप्त जगह धूप, पोषक तत्व एवं पानी की उपलब्धता रहती है। उपरोक्त अनुकूल दशाओं के कारण प्रत्येक पौध से कल्लों का बहुत अधिक उत्पादन होता है जो धान की पैदावार बढ़ाने में काफी सहायक है।

धान की उपयुक्त किस्में

अतिशीघ्र पकने वाली किस्में (75 से 110 दिन): जवाहर 201 (लम्बा पतला दाना, उपज 30-35 क्विं./हे.), जे आर 75 (मध्यम पतला दाना, उपज 30-35 क्विं./हे.)।

शीघ्र पकने वाली किस्में (115-125 दिन): जवाहर 353 (लम्बा पतला दाना, उपज 35-40 क्विं./हे.), रासी (मध्यम पतल दाना, उपज 35-40 क्विं./हे.), जे.आर.201, (लम्बा पतला दाना, उपज 25-30 क्विं./हे.), जे.आर.353, (लम्बा पतला दाना, उपज 25-30 क्विं./हे.), अनंदा, (मोटा दाना, सूखा रोधक, उपज 30-35 क्विं./हे.), पी.एन.आर 381, (पतला दाना, सुखा रोधक उपज 40-45 क्विं./हे.)।



श्री विधि द्वारा धान

का अधिक उत्पादन कैसे प्राप्त करें ?

मध्यम समय में पकने वाली जातियां (130-140 दिन): माधुरी (लम्बा पतला दाना, उपज 35-40 क्विं./हे.), क्रांति (मोटा गोल दाना, उपज 50-55 क्विं./हे.), पूसा बासमति (सुगंधित, लम्बा पतला दाना, उपज 30-35 क्विं./हे.), आई.आर. 64 (लम्बा पतला दाना, उपज 35-40 क्विं./हे.), आई.आर. 36 (लम्बा पतला दाना, उपज 40-50 क्विं./हे.) पूसा सुगंधा, (लम्बा पतला व सुगंधित दाना, उपज 40-45 क्विं./हे.)।

देर से पकने वाली किस्में (145-155 दिन): श्यामला (लम्बा पतला दाना, उपज 40-45 क्विं./हे.), स्वर्णा (लम्बा पतला दाना, उपज 50-55 क्विं./हे.)।

जल प्रबंधन: धान सघनता पद्धति अथवा एस.आर.आई द्वारा धान की खेती में उपयुक्त जल प्रबंधक अति आवश्यक है। इस विधि को ऐसे क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अपनाया जा सकता है जहाँ सिंचाई जल की पर्याप्त व्यवस्था हो जिससे कि खेत में उचित नमी लगातार बनाये रखने के लिए आवश्यकतानुसार पानी दिया जा सके। मिट्टी को निश्चित अंतराल पर गीला एवं सूखा रखने से पौधों की जड़ों एवं कल्लों का विकास अधिक अच्छा होता है।

खरपतवार नियंत्रण: इस विधि से उगाये गये धान में जलाक्रांत दशा नहीं होती है, इसलिए इसमें खरपतवारों की बढ़वार काफी अधिक होती है। अतः इनका नियंत्रण अति आवश्यक हो जाता है। एस.आर.आई. विधि के अनुसार धान में यांत्रिक विधि से खरपतवारों का नियंत्रण किया जाना चाहिए। इसके लिए हस्तचालित अथवा शक्ति चालित 'रोटेटिंग हो' का प्रयोग संस्तुत किया गया है। यांत्रिक खरपतवार नियंत्रण के दो प्रमुख लाभ हैं- पहला यह कि खरपतवार नष्ट होने से फसलों एवं खरपतवारों के बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं रहती, दूसरा यह कि ये मिट्टी में मिल जाते हैं तो सड़ने के बाद धान को पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं। इसके अलावा मिट्टी में वायु संचार बढ़ने से उसमें उपस्थित लाभदायक जीवों की संख्या में वृद्धि होती है जो मिट्टी के भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्मों में वृद्धि के लिए अति आवश्यक है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन: इस धान सघनता पद्धति में विभिन्न पोषक तत्वों का समुचित प्रबंधक फलदायक सिद्ध हुआ है।

जहां तक संभव हो पोषक तत्वों की पूर्ति जैविक स्रोतों, जैसे कम्पोस्ट गोबर की खाद एवं हरी खाद आदि से की जानी चाहिए। यदि जैविक स्रोत पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न हो तो आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति उर्वरकों एवं जैविक स्रोतों दोनों के एकीकृत प्रयोग द्वारा की जा सकती है।

धान सघनता पद्धति के लाभ

अधिक पैदावार: परंपरागत तरीके से

उगाने की तुलना में देश व विदेश में धान को सघनता पद्धति से उगाने पर 1.5-3.0 गुनी तक अधिक पैदावार प्राप्त की गई है। उफोफ (2004) के अध्ययन के अनुसार आंध्र प्रदेश में किसानों के खेतों पर किये गये धान सघनता पद्धति परीक्षणों में परंपरागत विधि की तुलना में 1.15 से 4.73 टन प्रति हेक्टेयर अधिक पैदावार प्राप्त की गई है।

जल की बचत: धान सघनता पद्धति से धान उगाने पर परंपरागत धान पद्धति की अपेक्षा 30-50 प्रतिशत कम पानी की आवश्यकता होती है। अतः कम पानी की उपलब्धता की दशा में धान सघनता पद्धति को आसानी से अपनाया जा सकता है।

फसल का न गिरना: चूंकि इस पद्धति से उगाये गये धान की जड़ें एवं कल्ले काफी

मजबूत होते हैं, इसलिए धान की फसल खेत में सीधी खड़ी रहती है और गिरती नहीं है।

कीटों और बीमारियों में कमी: सघनता पद्धति द्वारा उगाये गये धान के मजबूत पौधों पर कीड़ों और बीमारियों का प्रकोप काफी कम पाया है। इस प्रकार कीड़ों और बीमारियों के नियंत्रण के लिए प्रयुक्त रसायनों की कम आवश्यकता होती है और अंततः फसल उत्पादन की लागत घटती है। (शेष पृष्ठ 12 पर)

PURGE पजर् खरपतवारनाशक

खेत पर अब खरपतवारों का नहीं, सिर्फ फसल का होगा राज!

धानुका एग्रीटेक लिमिटेड
1800-102-1022

इंडिया का प्रणाम हर किसान के नाम

- डॉ. सर्वेश कुमार • डॉ. एस.के. तिवारी
- डॉ. मुकेश बंकोलिया
- डॉ. ओ.पी. भारती (वैज्ञानिक)

डु निया में मुख्य खाद्यान्न फसलों में गेहूँ एवं धान के बाद तीसरी मुख्य फसल के रूप में मक्का सामने आ रही है। इसका मुख्य कारण है इसकी उत्पादकता। क्योंकि इसकी उत्पादन क्षमता गेहूँ एवं धान से 25-100 प्रतिशत तक अधिक है। वर्षा ऋतु में उत्तम जल निकास वाली भूमियों में इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।

मक्का के लिए 6.5 से 7.5 पीएच मान वाली मिट्टी उत्तम होती है। औसत वर्षा, नमी युक्त उच्च तापमान वाला मौसम मक्का की वृद्धि एवं विकास व अच्छे उत्पादन के लिए सहायक होता है। खरीफ मक्का का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित कार्ययोजना को अपनाकर खेती कर सकते हैं जिसके प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं।

भूमि का चयन एवं भूमि की तैयारी: बलुई दोमट मिट्टी एवं उत्तम जल निकास वाली भूमि मक्का उत्पादन के लिए उपयुक्त है। गर्मी की गहरी जुताई करने के पश्चात् सूर्याताप से भूमि को उपचारित होने दिया जाता है तथा मानसून आने पर शीघ्र ही 2-3 जुताई कल्टीवेटर, हैरो या बख्खर चलकर मिट्टी को भुरभुरा बना लिया जाता है।

उपयुक्त किस्में: मक्का के लिए संकर जातियां विपुल उत्पादन देती हैं अतः किसान भाई खरीफ ऋतु में लगाई जाने वाली मक्का की संकर किस्मों का चयन कर सकते हैं। मक्का का संकर बीज निजी कंपनियों से खरीद सकते हैं। मध्य प्रदेश के लिये प्रमुख अधिसूचित संकर किस्में निम्नानुसार हैं।

किस्में	प्रकार	अवधि	उत्पादन
पी.ई.एच.एम.-1 एवं पी.ई.एच.एम.-2 (मा.कृ.अनु. परिषद नई दिल्ली)	संकर	शीघ्र पकने वाली (85 दिन से कम)	40 से 50 विव. प्रति हेक्टेयर
प्रो.-368 (प्रो.एग्रो) एक्स.-3342 (पायोनियर) डी.के.सी.-7074 (मोन्सेन्टो) जे.के.एम.एच.-175 (जे.के. सीड्स) बायो-9637 (बायो सीड्स) के.एच.-5991 (कंचनगंगा)			
के.एम.एच.-3426, के.एम.एच.-3712 (कावेरी सीड्स) एम.एन.एच. 803 (नुजीवीडु सीड्स) बिस्को-2418, बिस्को-111 (बिस्को सीड्स)	संकर	मध्यम अवधि (95 दिन से 85 दिन)	50 से 70 विव. प्रति हेक्टेयर
बिस्को.-855 (बिस्को सीड्स) एन.के.-6240 (सिंजैन्टा) एस.एम.एच.-3904 (शक्ति सीड्स) प्रो.-311 (प्रो. एग्रो) बायो.-9681 (बायो सीड्स) सीड्टैक-740, सीड्टैक-2324 (सीड्टैक)	संकर	देरी से पकने वाली (95 दिन से अधिक)	60 से 80 विव. प्रति हेक्टेयर

बोनी का उपयुक्त समय: बुआई हेतु 15-30 जून खरीफ मौसम में एवं रबी मौसम में अक्टूबर माह में उपयुक्त होगा। जायद के लिये फसल बुआई का समय निश्चित करते समय यह ध्यान रखे की फूल की अवस्था के समय तापमान 35 से.ग्रे. से अधिक न हो स बोने की गहराई 3 से 5 सेमी रखें।

कतार से कतार एवं पौधे से पौधे की दूरी

विवरण	कतार से कतार की दूरी सेमी	पौधे से पौधे की दूरी सेमी	प्रति हेक्टेयर पौधों की संख्या
जल्दी पकने वाली	60	20	80000
मध्यम अवधि	60	22	75000
देर से पकने वाली	75	20	65000

बीजोपचार का लाभ: बीजों की अंकुरण क्षमता बढ़ जाती है एवं बीज जनित फफूंदजन्य बीमारियों से सुरक्षा होती है। फफूंदजनित बीमारियों से बचाव हेतु फफूंदनाशक दवा

कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम एवं थायरम 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज अथवा वीटावेक्स पावर 1 ग्राम प्रति किग्रा की दर से उपचार करें। कीट प्रबंध के लिये एमीडाक्लोप्रोड 70 (डब्ल्यू एस) 5 ग्राम प्रति किग्रा बीज से उपचारित करें जिससे पौधे 30 दिन तक सुरक्षित होंगे। यदि जैव उर्वरकों से बीजोपचार करना है तो अंत में पी.एस.बी. एवं एजोटोबेक्टर कल्चर की 5-10 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करके बोनी करें तो ज्यादा पैदावार की संभावना होती है। जैव उर्वरकों का उपयोग 2.5-3 किग्रा पी.एस.बी. एवं 2.5-3 किग्रा एजोटोबेक्टर प्रति एकड़ की दर से लगभग 100-150 किग्रा गोबर की खाद में मिलकर बुवाई के पहले छिड़काव करने से अच्छे परिणाम मिलते हैं।

में दें। खेत में पानी भरने की स्थिति में एवं निंदाई गुड़ाई में देरी होने पर नत्रजन 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से निश्चित रूप से दें। खड़ी फसल में नत्रजन का प्रयोग निंदाई उपरान्त ही करें।

नींदा प्रबंधन: मक्का फसल को शुरूआती अवस्था में नींदा रहित होना चाहिये अन्यथा उत्पादन में कमी आती है। मक्का की फसल में एट्राजीन 1 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर बुवाई के बाद परन्तु उगने के पूर्व उपयोग करें। अन्तरवर्ती (मक्का-दलहन-तिलहन) फसल व्यवस्था में पेंडीमिथिलिन 1.5 किग्रा प्रति हेक्टेयर बोनी के तुरंत बाद किंतु अंकुरण के पूर्व नींदानाशकों का उपयोग करें। मक्का फसल में चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों की अधिकता होने पर 30-35 दिन पर 2,4-डी का 1.0 किग्रा प्रति



खरीफ में फायदेमंद मक्का की खेती

रोग प्रबंधन: मक्का फसल के प्रमुख रोग का विवरण.

रोग का नाम	लक्षण	नियंत्रण हेतु अनुशसित दवा	उपयोग करने का समय
पर्ण अंगमारी	छोटे गोला,अण्डाकार भूरे कट्याई रंग के धब्बे बनते हैं।	जिनेम, मिनेब 2.5-4 ग्राम प्रति ली.	8-10 दिन के अंतराल पर
मूरी घिरी	पत्तियां तने तथा भुट्टे के बाहरी छिलके पर हल्के पीले रंग के 1.5 मिलीमीटर व्यास के गोलाकार, अंडकार धब्बे बनते जाते हैं।	डाइथेन एम 45 या मेंकोजेब 2-2.5 ग्राम प्रति लीटर	बीमारी के शुरुआत होने पर
मूटुरोमिल आसिता (डाउनी मिलड्यू)	प्रारंभ में निचली पत्तियों पर लम्बवत 3 मिली मीटर चौड़ी पीले रंग की धारियां समानान्तर रूप में बनती हैं। बाद में ये धारियां भूरे रंग में बदल जाती हैं।	एप्रोन 35 डब्ल्यू.एस. (फफूंदनाशक) 2.5 ग्राम प्रति किग्रा बीज बीजोपचार	बोनी पूर्व बीजोपचार के समय

कीट प्रबंधन: मक्का फसल के प्रमुख कीट का विवरण

कीट का नाम	लक्षण	नियंत्रण हेतु अनुशसित दवा	दवा की व्यापारिक मात्रा/हे.	उपयोग करने का समय एवं विधि
तना छेदक मक्खी	इसके प्रकोप से पौधे का मुख्य प्ररोह कट जाने से मृत केन्द्र (डेडहार्ट) बन जाता है तथा पौधा मर जाता है।	फोरेट10जी	10 किग्रा./हे.	बोनी पूर्व
तना छेदक कीट	इल्लियां पहले पत्ती को खुरच-खुरचकर खाती हैं, जिससे मृत केन्द्र (डेडहार्ट) बन जाता है।	कार्बोप्यूरान 3जी	10 किग्रा./हे.	15 दिन की अवस्था में पौधे की पोंगली में डालें।

पोषक तत्व प्रबंधन: गोबर की खाद, कम्पोस्ट की मात्रा एवं उपयोग- सामान्यतः 6 से 8 टन प्रति हेक्टेयर की दर से कम्पोस्ट खाद का प्रयोग बोनी के पूर्व करना चाहिए तथा रासायनिक खादों में सामान्यतः नत्रजन 120 किग्रा, स्फुर 60-80 किग्रा, पोटाश 40-50 किग्रा एवं जिंक 25.30 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य देना चाहिए।

रासायनिक उर्वरकों की मात्रा मिट्टी परीक्षण परिणाम के आधार पर देना अधिक लाभप्रद होगा। नत्रजन की एक तिहाई मात्रा एवं स्फुर तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई करते समय सरते से कतारों में दें। शेष दो तिहाई में से एक तिहाई नत्रजन 25-30 दिन पर एवं एक तिहाई 45-50 दिन पर खड़ी फसल

हेक्टेयर उगे हुये खरपतवारों पर छिड़काव कर नियंत्रण किया जा सकता है।

खरीफ मक्का का उत्पादन: यदि उन्नत प्रबंधन किया जाये तो 60-80 क्विंटल संकर मक्का प्रति हेक्टेयर क्षेत्र से खरीफ में प्राप्त की जा सकती है।

कटाई गहाई एवं भण्डारण: मक्का के हरे भुट्टे भी बाजार में बेच कर मुनाफा कमाया जा सकता है साथ ही मक्का को दाने के रूप में भी बेचा जा सकता है। मक्का के भुट्टों से दाने अलग करने हेतु मक्का छीलक यंत्र से अलग कर सकते हैं। दानों को धूप में सुखाकर जब नमी लगभग 8-10 प्रतिशत रह जाये तो भण्डारण कर सकते हैं।

- डॉ. कैलाश नारायण गुप्ता
 - डॉ. शुभम मिश्रा
- जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

अरहर उत्पादन की उन्नत तकनीक

अरहर खरीफ ऋतु में पैदा की जाने वाली दलहन की अति महत्वपूर्ण फसल है। मध्यप्रदेश में इसकी खेती पर्याप्त क्षेत्रफल में होती है और पिछले एक दशक में किसानों का रुझान इसकी खेती की तरफ बढ़ा है।



विशेषकर ऐसे क्षेत्रों जहां पर कि सिंचाई की पर्याप्त सुविधा नहीं है। इसके उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी के लिए उपयुक्त किस्मों एवं सस्य पद्धतियों के चयन बेहद महत्वपूर्ण है। अरहर की विभिन्न किस्मों की उत्पादन क्षमता 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है, जबकि प्रदेश में इसकी औसत उत्पादकता 10 से 11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर ही है। इसलिये आवश्यक है कि अरहर उत्पादन हेतु समग्र रूप से सस्य क्रियाओं एवं कीट व्याधि का प्रबंधन एक साथ अपनाया जाए जिससे इस फसल की अधिकतम उत्पादन क्षमता को हासिल किया जा सके।

अरहर की उन्नत किस्में

कम अवधि में पकने वाली किस्में (140-160 दिन): आई.सी.पी.एल.-87 (प्रगति), आई.सी.पी.एल.-151 (जाग्रति), टाईप-21, खरगोन-2 आदि।

मध्यम अवधि में पकने किस्में (160-200 दिन): जवाहर अरहर-4, नम्बर-148, खरगोन-1, जवाहर अरहर-3

देर से पकने वाली किस्में (200-270 दिन): ग्वालियर-3, एन.पी.-151, पूसा-9, नरेन्द्र अरहर-1

खेत की चयन एवं तैयारी: अरहर की फसल हेतु ऐसी मृदा आवश्यक है जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो। चूंकि खेत में पानी भरने पर फसल को भारी क्षति होने की आशंका रहती है। अरहर में मृदा जनित रोग से बचाव हेतु एक ही खेत में लगातार कई वर्षों तक अरहर नहीं उगानी चाहिए। बुवाई करने से पूर्व खेत की एक बार गहरी जुताई करके 02-03 बार हैरो चलाकर मिट्टी को भुरभुरी कर लेना चाहिए। इसके बाद खेत बुवाई के लिए तैयार हो जाता है। बुवाई के समय खेत में पर्याप्त नमी का होना अति आवश्यक है।

बुवाई का समय: मुख्यता फसल पकने की अवधि के आधार पर अरहर को विभिन्न भागों में बांटा गया है। कम अवधि में पकने वाली (110-160 दिन), मध्यम अवधि में पकने वाली (160-200 दिन) एवं देर से पकने वाली (200-270 दिन)।

बुवाई की विधि: अरहर की फसल का अधिकतम उत्पादन लेने हेतु यह आवश्यक है कि बोये गये क्षेत्र में पौधों की पर्याप्त संख्या है। बुवाई में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 से 50 से.मी. एवं पौधों की दूरी 15 से 20 से.मी. रखनी चाहिए।

मेड़ों पर अरहर की बुवाई: इसके लिए आवश्यक है कि पर्याप्त दूरी पर 8-10 इंच ऊंची मेड़ बना लें तथा उन पर लाइनों में इस प्रकार बुवाई करें कि पौधों की एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी उचित बनी रहे।

बीज शोधन: अरहर की फसल में बुवाई से पूर्व बीज को अवश्य ही शोधित कर लेना चाहिए ताकि कवक जनित बीमारियों से फसल को बचाया जा सके। बीज शोधन हेतु प्रति किलोग्राम बीज की मात्रा में 2.5 ग्राम थोरम व 1.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम को अच्छी तरह मिलाए जिसमें दबा बीजों की सतह पर अच्छी तरह चिपक जाए। इस प्रक्रिया को बुवाई से 8 से 10 दिन पूर्व कर बीज की बुवाई हेतु रख दें।

बीजोपचार: अरहर की फसल में जीवाणुधारी गांठों के विकास को सुनिश्चित करने हेतु बीज राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना जरूरी होता है। इसके लिए 10 किलोग्राम बीज को एक पैकेट कल्चर (200 ग्राम) के साथ उपचारित करना चाहिए। कल्चर को बीज में मिलाने हेतु आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ अथवा चीनी का घोल बनाकर उबाल लें और ठंडा कर ले तदोपरांत उसमें राइजोबियम कल्चर को मिलाकर इस मिश्रण को बीज के ऊपर छिड़क कर हाथ से इस तरह मिला दें कि पूरे बीज में कल्चर चिपक जाए। बुवाई से 7-8 घंटे पूर्व ऐसा करके बीज को छाया में सूखा दें और बाद में बुवाई कर दें।

उर्वरक प्रबंधन: अरहर दलहन वर्ग की फसल है। जिसमें नत्रजन की आवश्यकता कम पड़ती है, क्योंकि इसकी जड़ों में पाये जाने वाले जीवाणु वायुमंडल में नाइट्रोजन अवशोषित कर फसल को पहुंचाते रहते हैं, परन्तु जब तक कि जड़ों में जीवाणुधारी गांठों का पूर्ण विकास नहीं हो जाता है तब तक इसको नाइट्रोजन की आवश्यकता होती है। यह अवधि 40-45 दिन की होती है इस अवधि में पौधे के पोषण हेतु 20 कि.ग्रा. नत्रजन प्रतिशत हेक्टेयर की भी आवश्यकता होती है। उपरोक्त उर्वरकों की पूरी मात्रा बुवाई के समय ही दें। बुवाई के समय 15-20 से.मी. की गहराई पर कुंड में उर्वरक देने से पौधों द्वारा उर्वरकों का अधिकतम उपयोग कर लिया जाता है।

जल प्रबंधन: अरहर खरीफ ऋतु की फसल है। इसमें प्रायः सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। यदि वर्षा नहीं होती है तो फसल को 1 अथवा 2 सिंचाई पर्याप्त होती है। यदि सितंबर माह के बाद वर्षा न हो तो फूल आने व दाना बनने की अवस्था पर एक अतिरिक्त हल्की सिंचाई करना लाभदायक रहता है। सिंचाई के दौरान यह अवश्य ध्यान रखें कि

खेत में पानी न भरे इसके अलावा वर्षा के पानी के निकास की भी समुचित व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए।

खरपतवार प्रबंधन: अरहर की फसल में पौधों की बढ़वार को समान्य रखने हेतु आरंभिक 30-40 दिन तक खरपतवारों की रोकथाम अति आवश्यक है। इसके लिए फसल में खुरफा द्वारा पहली गुड़ाई बुवाई के लगभग 20 दिन एवं दूसरी 40 दिन बाद करें खरपतवारनाशी रसायनों द्वारा भी खरपतवार को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है।

बुवाई के तुरंत जमाव के पूर्व पैन्डीमिथलिन की 3.3 कि.ग्रा. क्रियाशील अवयव की मात्रा 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए।

पादप सुरक्षा कैसे करें?

अरहर के प्रमुख हानिकारक कीट

फली की मक्खी (तुरपाड फ्लाई): यह अरहर का प्रमुख हानिकारक कीट है। इस कीट के शिशु जिसे मैगेट करते हैं, फलियों के अन्दर घुसकर खाते हैं। कीट से ग्रसित फलियां प्रायः टेढ़ी-मेढ़ी हो जाती हैं।

प्रबंधन: ग्रसित फलियों को प्रारम्भ में विशेषकर दिसम्बर-जनवरी में तोड़कर जला देना चाहिए। कटाई के उपरांत खेत में फसल के अवशेषों का एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिए। अधिक प्रकोप की दशा में न्यूवाक्रान 800 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।

फली छेदक: यह कीट अरहर की फलियों, फूलों एवं पत्तियों को क्षतिग्रस्त करता है।

प्रबंधन: डार्इमिथोएट या इमिडाक्लोरप्रिड 17.8 एस.एल. को 3 मि.ली./10 ली.पानी या फेनवेलरेट 20 ई.सी. 1 मि.ली./लीटर पानी का छिड़काव करना चाहिए। (शेष पृष्ठ 14 पर)

मिडि पुरकुराणी

JU AGRI SCIENCES PVT. LTD.

Head Office : 2302, 3rd Floor, Express Trade Tower-2,
B-36, Sector-132, Noida-201301 (U.P.), India

Corporate Office : Jhaver Centre, /2, Marshall's Road, Chennai - 600008

E-mail : customercare@juagrisciences.com | Website : www.juagrisciences.com

Contact No. : 8899500108, 9109909179, 8998618815, 8628175283

- डॉ. बी.एस. किरार, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख
- डॉ. सुनील कुमार जाटव ● डॉ. आर.के. प्रजापति
- डॉ. एस.के. सिंह ● डॉ. आई.डी. सिंह,
- जयपाल छिगारहा, वैज्ञानिक
- कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ (म.प्र.)



अधिक उत्पादन के लिए वैज्ञानिक तरीके से उड़द की खेती

उड़द, जिसे काली दाल या ब्लैकग्राम भी कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण दलहन फसल है। यह भारत में प्राचीन काल से उगाई जाती रही है और यह प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और खनिजों से भरपूर होती है। उड़द की दाल भारतीय रसोई में प्रमुख स्थान रखती है और इसका उपयोग विभिन्न प्रकार के व्यंजनों में किया जाता है।

जलवायु और मिट्टी: उड़द की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु उपयुक्त होती है। इसे गर्म और शुष्क मौसम की आवश्यकता होती है। उड़द को विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है, लेकिन अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है।

उन्नतशील किस्में: इंदिरा उड़द प्रथम, मुकुंदरा, प्रताप उड़द-1, प्रताप उड़द 9, आई.पी.यू. 13-1, आई.पी.यू.-10-26, कोटा उड़द-2, कोटा उड़द-3 आदि।

बुवाई का समय: उड़द की बुवाई खरीफ और जायद दोनों मौसमों में की जा सकती है। खरीफ में इसकी बुवाई जून से जुलाई के बीच होती है, जबकि जायद में इसकी बुवाई मार्च में की जाती है।

बीज की दर और बुवाई: उड़द की बुवाई के लिए प्रति हेक्टेयर 20.25 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बीज की बुवाई कतारों में की जाती है, जिनकी दूरी 30-45 सेमी होती है। बीजों को 3-5 सेमी गहराई में बोया जाता है।

खरपतवार नियंत्रण: इसके नियंत्रण के लिए खेत में निंदाई-गुड़ाई करें या हाथ से खरपतवार निकालकर फसल को हानि होने से रोका जा सकता है। खरपतवार नियंत्रण करने के लिए रासायनिक दवा के रूप में इमेजाथापायर 500 ग्राम प्रति 2.5 एकड़ की दर से 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

सिंचाई: उड़द की फसल को अधिक सिंचाई की

(पृष्ठ 9 का शेष)

श्रीविधि द्वारा धान...

बीज, खाद एवं उर्वरक की कम आवश्यकता: धान सघनता पद्धति में रोपाई के लिए एक स्थान पर एक ही पौध की आवश्यकता होती है जो परंपरागत विधि की तुलना में ज्यादा अंतरण पर लगाया जाता है। अतः इस प्रकार रोपाई के लिए कम पौधों की आवश्यकता होती है जो कम बीज द्वारा उगाये जा सकते हैं।

उत्पादन लागत में कमी: एस.आर.आई. विधि से धान लगाने पर कम बीज कम पानी, कम खाद-उर्वरक और कम रासायनों की आवश्यकता होती है और इससे उत्पादन लागत में कमी लाने में सहायक है।

धान के प्रमुख कीट व उनका नियंत्रण: जिस खेत में पूर्व के धान फसल में फाल्स स्मट एवं तना छेदक कीट गत वर्ष लगा हो उस खेत को गर्मी में जुताई अवश्य कर दें। यदि उपलब्ध हो तो तना छेदक कीट में नियंत्रण हेतु विशेषज्ञों के परामर्श से ट्राइकोकार्ड 15-20 कोर्ड/हेक्टेयर रोपनी के 20-25 दिनों के उपरान्त व्यवहार करें। तत्पश्चात आवश्यकतानुसार खेत में दानेदार कीटनाशी कार्बोफ्यूथुरान-3 जी (20-25 किलोग्राम/हे.) या फोरेट-10 जी (10 किलोग्राम/हे.), बिचड़ों की रोपाई के 03 सप्ताह के बाद डालें। गंधी कीट के नियंत्रण के लिए 20-25 किलोग्राम नीम की खल्ली या मिथाइल पैराथियान 02 प्रतिशत या क्विनालफास 1.5 प्रतिशत धूल का 10 से 15 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की दर से सुबह में धुंकाव करें। पत्ती लपेटक या हिस्पा के नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफास 26 ई.सी अथवा क्लोरपायरीफास 25 ई.सी का 02 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। भूरा एवं हरा मधुआ कीट के नियंत्रण के लिए थिमेट 10 प्रतिशत दानेदार दवा 10 किलोग्राम,

आवश्यकता नहीं होती है। सामान्यतः इसे वर्षा पर निर्भर रहते हुए उगाया जाता है। फूल एवं फलियों में दाना भरते समय खेत में नमी न होने की स्थिति में 1-2 हल्की सिंचाई करना अति आवश्यक है।

खाद और उर्वरक: उड़द की फसल के लिए जैविक खाद जैसे गोबर की खाद, कम्पोस्ट आदि का उपयोग करना लाभदायक होता है। इसके अलावा 20-25 किग्रा नाइट्रोजन, 40-50 किग्रा फॉस्फोरस और 20-25 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से दिया जा सकता है।

रोग और कीट नियंत्रण: उड़द की फसल पर विभिन्न प्रकार के रोग और कीटों का हमला हो सकता है। इनमें मुख्यतः तम्बाखू की इल्ली, मोजेक वायरस, पाउडरी मिल्ड्यू, जैसिड और एफिड शामिल हैं। रोग और कीटों से बचाव के लिए समय-समय पर फसल की निगरानी और उचित कीटनाशक का प्रयोग करना चाहिए।

उड़द में एन्थ्रेक्नोज रोग लगता है, जिसमें पत्तियों पर काले घेरे बन जाते हैं और पत्तियाँ हल्की पीली दिखाई देने लगती हैं। इसके नियंत्रण हेतु बीज उपचार करें या खड़ी फसल में टेबुकोनाजोल 50 प्रतिशत+ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 500 ग्राम प्रति

नीम की खल्ली में मिलाकर प्रति हेक्टर की दर से छीट दें अथवा इमिडाक्लोरप्रिड 17.8 एस.एल. का प्रयोग 01 मि.ली. दवा/03 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

धान के प्रमुख रोग व उनका उपचार: धान की भूरी चित्ती एवं फाल्स स्मट के रोग से बचने हेतु बीजोपचार 02 ग्राम थीरम या कैप्टान से प्रति किलोग्राम बीज की दर से करें। भूरी चित्ती रोग की रोकथाम के लिए मैकोजेब की 2.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। मिथ्या कलिका रोग के लक्षण फसल पर दिखाई दे तो ब्लाइटॉक्स-50 का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

पत्रावरण झुलसा के लक्षण प्रकट होते ही प्रारंभ में ऐसे पौधे निकाल दें। रोग के फैलते ही बेविस्टीन अथवा प्रॉपिकानाजोल अथवा हिनोसान 01 ग्राम प्रति लीटर की दर से पौधे के निचले भाग पर छिड़काव करें। ब्लाइटॉक्स-50 या फाइटोलान 02.5 ग्राम एवं स्ट्रोप्टो साईक्लीन का 60 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर जीवाणु अंगमारी रोग प्रकट होने पर प्रति हेक्टेयर 10 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव अवश्य करें। किसी भी बीमारी के आने पर नत्रजन का प्रयोग कम कर देना चाहिए। फाल्स स्मट की रोकथाम के लिए रोग लक्षण प्रकट होते ही टिल्थ 1 ग्राम अथवा कापर आक्सीक्लोराईड 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

खैरा रोग के नियंत्रण के लिये रोपाई के पहले जिंक सल्फेट 20-25 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की दर से खेत में मिलायें। खड़ी फसल में 1000 ली. पानी में 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 2.5 कि.ग्रा. बिना बुझा चूना का घोल बनाकर उसमें 2 कि.ग्रा. यूरिया मिलाकर छिड़काव करने से रोग का उपचार होता है तथा फसल की बढ़वार में वृद्धि होती है।

2.5 एकड़ में पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करें। पीला मोजेक रोग के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.5 प्रतिशत एस.एल. की 7 मिली/पम्प की दर से छिड़काव करें।

कटाई और उपज: उड़द की फसल 60-70 दिनों में तैयार हो जाती है। जब पौधे के पत्ते पीले पड़ने लगें और फलियाँ सूखने लगें तो फसल की कटाई करनी चाहिए। उड़द की औसत उपज 12.15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

महत्व: उड़द का पोषण महत्व अत्यधिक है। इसमें प्रोटीन, फाइबर, आयरन, कैल्शियम और अन्य आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं। यह शाकाहारी आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसका सेवन शरीर की पोषण आवश्यकताओं को पूरा करता है।

निष्कर्ष: उड़द की खेती किसानों के लिए लाभकारी साबित हो सकती है, यदि इसे सही तरीके से किया जाए। इसकी उन्नत किस्में और बेहतर कृषि तकनीकों का उपयोग करके उपज में वृद्धि की जा सकती है। उड़द न केवल पोषण के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह किसानों की आर्थिक स्थिति को भी मजबूत करने में मददगार है। इस प्रकार उड़द की खेती एक महत्वपूर्ण और लाभकारी कृषि है जो न केवल किसानों के लिए फायदेमंद है बल्कि खाद्य सुरक्षा में भी योगदान करती है।

कृषि महाविद्यालय में मनाया राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस

छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया

गंजबासौदा। कृषि महाविद्यालय गंजबासौदा में राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर एक ऑनलाइन क्विज का आयोजन किया गया जिसमें कुल 414 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम से अपना रजिस्ट्रेशन करवाया।

सभी रजिस्टर्ड प्रतिभागियों को निर्धारित समय पर एक लिंक के माध्यम से क्विज में पूछे गए सवालों के जवाब देना थे। इस क्विज में जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध सभी 8 कृषि महाविद्यालयों एवं 2 उद्यानिकी महाविद्यालयों के स्नातक वर्ग के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

क्विज के प्रथम दस शीर्ष अंक (टॉप स्कोर) प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को योग्यता प्रमाण पत्र प्रदान किये गए। ज्ञात हो कि राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस का आयोजन भारतीय सांख्यिकी के जनक प्रोफेसर प्रशांत चंद्र महालनोबिस के जन्मदिन के अवसर पर मनाया जाता है।

इस दिवस का आयोजन महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापकों डॉ. मुजाहिदा सय्यद, डॉ. राज मोहन शर्मा एवं डॉ. अपर्णा शर्मा की निगरानी में संपन्न हुआ। विश्वविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों एवं छात्रों ने इस कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजन होने की इच्छा जताई है।

डॉ. आशीष श्रीवास्तव
कृषि महाविद्यालय, गंजबासौदा
जिला- विदिशा (म.प्र.)

मा नव जीवन में सब्जियां अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। क्योंकि सामान्यतः स्वास्थ्य के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की उपलब्धि एवं विटामिन और खनिज तत्वों की आपूर्ति सब्जियों के माध्यम से ही होती है।

सब्जियों की खेती नगदी फसल के रूप में की जाती है, जो हमारे कृषकों की आमदनी का प्रमुख स्रोत है। हमारा देश चीन के बाद सब्जी उत्पादन में दूसरे नंबर पर है। इसके बावजूद इसकी प्रति व्यक्ति उपलब्धता में कमी का प्रमुख कारण पैदावार में बढ़ोतरी न होना है। सब्जियों में अनेकों बीमारियों का प्रकोप होता है जिससे उनकी गुणवत्ता एवं उत्पादन में काफी कमी आ जाती है। सब्जियों के पौधों को रोगों से बचाने के लिए रोगों की पहचान एवं प्रबंधन के उपायों की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है।

सब्जियों के प्रमुख रोग

आर्दगलन: यह फफूंदजनित रोग है। इस रोग के प्रकोप से बीज जमीन के नीचे अंकुरण से पहले या अंकुरण के 10 से 15 दिन बाद नर्सरी में पौधा भूमि की सतह के पास से गलकर गिर जाता है। यह रोग छोटे पौधों में अधिक होता है। यह समस्या वर्षा ऋतु में अधिक गम्भीर हो जाती है। रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां पीली होने लगती हैं और कई बार पत्तियों पर सफेद रंग के धब्बे भी उभरने लगते हैं।

प्रबंधन

- ▶ नर्सरी उठी हुई क्यारी पद्धति से तैयार करें। जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो।
- ▶ ग्रीष्मकाल में नर्सरी वाले स्थान पर भूमि सौर्यकरण द्वारा भूमि को उपचारित कर लें।
- ▶ बीज को बुआई से पूर्व ट्राईकोडर्मा विरिडी अथवा स्यूडोमोनास से उपचारित करें।
- ▶ बीज को बुआई से पूर्व थाइरम 75 डब्ल्यू एस नामक फफूंदनाशक या मेटालेक्सिल व थाइरम (1:1 अनुपात में मिलाकर) 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

भभूतिया रोग: इस रोग को चूर्णी फफूंद रोग के नाम से भी जाना जाता है। गर्मी के मौसम में इस रोग का प्रकोप अधिक होता है। इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों पर सफेद चूर्ण के समान धब्बे उभरने लगते हैं। पत्तों और पौधों के दूसरे भागों पर फफूंदी की सफेद आटे जैसी तह जम जाती है। रोग बढ़ने के साथ पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं और पौधों के विकास में बाधा आती है। फल का गुण व स्वाद खराब हो जाता है।

प्रबंधन

- ▶ बीज को बुआई से पूर्व ट्राईकोडर्मा विरिडी अथवा स्यूडोमोनास से उपचारित करें।
 - ▶ बीज को बुआई से पूर्व थाइरम 75 डब्ल्यू एस नामक फफूंदनाशक 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
 - ▶ 500 ग्राम घुलनशील गंधक (सल्फेक्स या वेटसल्फ) 200 लीटर पानी में प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।
- कुकड़ा रोग:** इस रोग को घुरचा रोग, बंधा



रोग, पत्ती मरोड़ रोग, चुरड़ा-मुरड़ा रोग, लीफ कर्ल आदि कई नामों से जाना जाता है। इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां ऊपर या नीचे की तरफ मुड़ने लगती हैं। थ्रिप्स के कारण पत्तियां ऊपर की तरफ मुड़ने लगती हैं। माइट के प्रकोप से पत्तियां नीचे की तरफ मुड़ने लगती हैं। पत्तियां एवं पत्तियों की शिराएं मोटी हो जाती हैं। प्रभावित पौधे झाड़ियों की तरह दिखने लगते हैं। इस विषाणु जनित रोग के कारण पौधों का विकास रुक जाता है और पौधों में फल कम लगते हैं। इस रोग के कारण मिर्च की फसल को बहुत नुकसान होता है।

प्रबंधन

- ▶ कुकड़ा रोग के लक्षण दिखने पर पौधों को नष्ट कर दें।
- ▶ बीज की बुआई से पहले खेत की एक बार गहरी जुताई अवश्य करें।
- ▶ यदि खेत में रोग से ग्रस्त पौधे हैं तो उन्हें नष्ट कर दें।
- ▶ प्रमाणित एवं रोग रहित बीज का चयन करें।
- ▶ सफेद मक्खियों से निजात पाने के लिए प्रति लीटर पानी में 5.0 मिलीलीटर नीम का तेल मिलाकर छिड़काव करें।

उकठा रोग: यह एक फफूंदजनित रोग है। यह फफूंद मिट्टी में काफी लंबे समय तक रहते हैं। शुरुआत में पौधों की ऊपरी पत्तियां मुरझाने लगती हैं। इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां नीचे की तरफ झुकने लगती हैं। कुछ समय बाद पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं। समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो पूरा पौधा पीला होकर सूख जाता है। मौसम में होने वाला बदलाव भी इस रोग का प्रमुख कारण है।

प्रबंधन

- ▶ फसल चक्र अपनाएं।
- ▶ पौधों को लगाने से पहले खेत की एक बार गहरी जुताई करें।
- ▶ भूमि शोधन के लिए खेत तैयार करते समय प्रति एकड़ खेत में 40 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में 1.5 से 2.0 किलोग्राम ट्राईकोडर्मा विरिडी मिला कर प्रयोग करें।
- ▶ बुवाई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 2.0 ग्राम थीरम से उपचारित करें।
- ▶ खड़ी फसल में रोग के लक्षण नजर आने पर संक्रमित पौधों को सावधानीपूर्वक खेत से बाहर निकाल कर नष्ट कर दें।
- ▶ रोग के लक्षण दिखने पर कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. 0.2 प्रतिशत घोल को पौधों की

जड़ों में डालें।

एन्थेक्नोज: यह रोग “कोलेटोट्राईकम केप्सीकाई” नामक फफूंद से होने वाला अति व्यापक एवं महत्वपूर्ण रोग है। इस रोग से ग्रस्त फलों पर छोटे-छोटे काले रंग के धब्बे बन जाते हैं। विकसित पौधों पर शाखाओं का कोमल शीर्ष भाग उपरी से नीचे की ओर सूखना प्रारम्भ हो जाता है।

प्रबंधन

- ▶ फसल चक्र अपनायें तथा स्वस्थ व प्रमाणित बीज बोयें।

▶ रोग की प्रारंभिक अवस्था में तापयुक्त फफूंदनाशक दवा का प्रयोग करें।

तना सड़न रोग: इस रोग के होने पर जमीन की सतह से सटे तने मुलायम होने लगते हैं। कुछ समय बाद पौधों का तना सड़ने लगता है। रोग बढ़ने पर पौधे सूख कर गिरने लगते हैं। इस रोग से बचने के लिये मिर्च की नर्सरी में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।

प्रबंधन

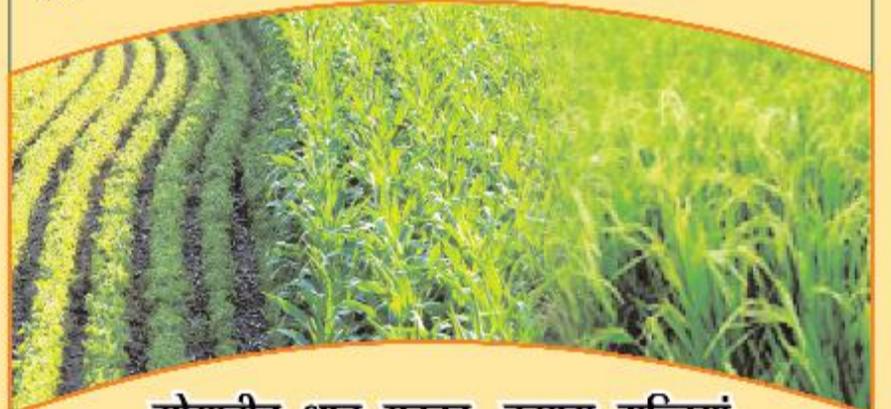
इस रोग से बचने के लिए मिर्च की नर्सरी में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें। बुवाई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 1.0 ग्राम कार्बेन्डाजिम से उपचारित करें। इसके अलावा प्रति लीटर पानी में 2.0 ग्राम केप्टान मिलाकर छिड़काव करें।

सब्जियों में रोगों से बचाव के प्राकृतिक उपाय

▶ गर्मी की जुताई करें, ताकि खेत के नीचे की मिट्टी को सूर्य की गर्मी प्राप्त हो सके और भूमि के अन्दर पड़े हुए फफूंद सूर्य की तेज धूप में नष्ट हो सके। ▶ निरोगी फसल एवं अधिक उत्पादन हेतु साफ एवं स्वस्थ बीजों का ही प्रयोग करें। ▶ खेत में पूर्व फसल के अवशेष एवं डंठल आदि एकत्र कर नष्ट कर दें।

(शेष पृष्ठ 16 पर)

ट्रॉपिकल एग्रो सिस्टम



सोयाबीन, धान, मक्का, कपास, सब्जियां
व कंद वर्गीय आदि फसलों में उच्च बढ़वार व
पैदावार हेतु जमीनी और छिड़काव के सम्पूर्ण
पोषक तत्वों का समाधान



TROPICAL AGRO

ट्रॉपिकल एग्रो सिस्टम (इं) प्रा.लि., म.प्र. (छ.ग.)

105 कॉर्पोरेट हाउस, 169 आर.एन.टी. मार्ग इंदौर (म.प्र.)

फ़ोन : 0731-4045702 E-mail: indore@tropicalagro.com

किसानों की आवश्यकता के अनुरूप ACE ट्रैक्टर : श्री खनेजा

नैनो उर्वरक उपयोग कार्यशाला आयोजित

किसानों के बीच ACE ट्रैक्टर की बढ़ती लोकप्रियता

(राजेन्द्र राजपूत)

भोपाल। ट्रैक्टर उद्योग में तेजी से आगे बढ़ रही एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) ट्रैक्टर म.प्र. एवं छग के किसानों के बीच वेहद ज्यादा पसंद किया जा रहा है। यह ट्रैक्टर खेती के सभी कार्यों के अलावा दुलाई का भी सबसे बड़ा आल राउंडर है।

एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड ACE ट्रैक्टर के चीफ जनरल मैनेजर सेल्स श्री रविन्द्र सिंह खनेजा ने बताया कि मप्र एवं छग के किसानों ने जो स्नेह दिया उसके लिए सभी किसान भाईयों का आभार व्यक्त किया। श्री खनेजा ने बताया कि ACE ट्रैक्टर सर्वाधिक लोकप्रिय है। ट्रैक्टर के विक्रय पश्चात किसानों को समुचित सर्विस देने पर कंपनी का पूरा फोकस

रहता है।

उन्होंने बताया कि समय-समय पर डीलर्स एवं किसानों को कंपनी प्रशिक्षण सुविधा भी उपलब्ध करवाती है। श्री खनेजा ने बताया कि देशभर में कंपनी डीलर्स नेटवर्क

बढ़ाने का अभियान चला रहा है। ACE किसानों को आधुनिक फीचर्स से युक्त स्वदेशी ट्रैक्टर उपलब्ध करवाने के प्रति वचनबद्ध है। मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के किसानों को ACE डीलर्स भी किसानों की विक्रय पश्चात समुचित सेवाएं उपलब्ध करवा रहे हैं। श्री खनेजा ने बताया कि ACE का प्रमुख उद्देश्य किसानों की स्थानीय जरूरत के मुताबिक



श्री रविन्द्र सिंह खनेजा
चीफ जनरल मैनेजर सेल्स

ट्रैक्टर उपलब्ध करवाना है। वर्तमान में ACE ट्रैक्टर 25 हार्स पावर से 90 हार्स पावर श्रेणी के अन्तर्गत लगभग 70 वेरियन्ट में उपलब्ध

है। श्री खनेजा ने बताया कि हमारी कंपनी द्वारा ट्रैक्टरों का निर्माण फरीदाबाद स्थित अत्याधुनिक कारखाने में किया जाता है। ACE ट्रैक्टर कारखाने की उत्पादन क्षमता 15 हजार ट्रैक्टर वार्षिक है। वर्तमान में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के किसानों को ACE ट्रैक्टर सबसे ज्यादा पसंद किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि ACE ट्रैक्टर सभी फीचर्स में तैयार किया गया है ताकि म.प्र. छग के किसानों को किसी प्रकार कि परेशानी न हो। किसानों द्वारा ACE ट्रैक्टर पसन्द हैं।



उज्जैन। जिले के कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र में नैनो उर्वरकों के उपयोग एवं उनके महत्व विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन इफको द्वारा

किया गया, जिसमें कृषि विभाग के अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप संचालक कृषि यू.एस. तोमर ने की। कार्यशाला में जिले के सभी वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, सहायक कृषि विकास अधिकारी एवं कृषि विस्तार अधिकारी सहित 120 से अधिक अधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में इफको उज्जैन के क्षेत्र प्रबंधक दीपक पाल ने सहकारिता और किसानों के हित में इफको द्वारा किए जा रहे नवाचारों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किस प्रकार संतुलित उर्वरक उपयोग से कृषकों की लागत में कमी लाकर, उत्पादन की गुणवत्ता एवं पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिया जा सकता है। इस अवसर पर संतोष रघुवंशी, उप प्रबंधक (कृषि सेवाएं), राज्य कार्यालय भोपाल, द्वारा पॉवर पॉइंट

प्रजेंटेशन के माध्यम से नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी जैसे नवीन उर्वरकों के वैज्ञानिक उपयोग एवं उनके लाभों की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि पारंपरिक दानेदार यूरिया व डीएपी की तुलना में नैनो उर्वरक कम मात्रा में उपयोग होने पर भी अधिक प्रभावी सिद्ध होते हैं, जिससे मृदा, जल और वायु

प्रदूषण में कमी आती है और खेती अधिक लाभकारी बनती है। यू.एस. तोमर ने अधिकारियों से आग्रह किया कि वे इस तकनीक की जानकारी अधिक से अधिक कृषकों तक पहुंचाएं और उन्नतशील कृषकों के अनुभवों को उदाहरण स्वरूप साझा करें, ताकि जिले में नैनो उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा मिल सके। सहायक कृषि विकास अधिकारी कमलेश राठौर ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि नैनो उर्वरकों के उपयोग से किस प्रकार किसानों को बेहतर उत्पादन और कम लागत का लाभ मिला है। दीपक पाल द्वारा सभी अतिथियों, अधिकारियों एवं सहभागियों का आभार व्यक्त किया गया।



Largest & Most Successful International Agriculture, Dairy & Horticulture Technology Exhibition of Madhya Pradesh

India Farm-Tech
AN EXHIBITION ON FARMING TECHNOLOGY

08 | 09 | 10 NOVEMBER 2025
LABHGANGA EXHIBITION CENTER
INDORE, MADHYA PRADESH

Our Milestones

Event Organized	90	Exhibitors	6500	Exhibition Organizing Expertise	5+ Countries	Industry Cluster	10
-----------------	----	------------	------	---------------------------------	--------------	------------------	----

Organizers: Radeecal, Colossal
Sponsored by: GFI, INBIA, etc.

+91 99740 29797
+91 90819 20200
agri@farmtechindia.in | www.farmtechindia.in

खेती को फायदेमंद बनाने का नायाब तरीका सीखें

क्या आपकी जमीन से खेती करने के आगे बढ़ने का समय है? क्या आप खेती को और अधिक लाभदायक बनाने के लिए एक नया उपाय खोज रहे हैं? क्या आपकी खेती में अधिक पैसा है और आप इसे और अधिक बढ़ाने के लिए तैयार हैं? हम आपको जमीन के चयन से लेकर फसल लगाने, उपादन और उपादन के तकनीकी विषयों तक की पूरी जानकारी प्रदान करेंगे।

हम आपसे एक खेती की बात कर रहे हैं जो आपको अधिक लाभ प्रदान कर सकती है। AT और BR के पीछे की खेती एक बहुत ही उपयुक्त विचार है, जो आपको अधिक मुनाफा दे सकती है। इन पीछे की विशेषता और पीछे के कारण, इससे बाजार में उच्च मूल्य मिल सकता है और आपको अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

एक एकड़ जमीन में 800 ऑस्ट्रेलियन डॉलर और 800 किलो मिर्च फसल की खेती कर के आप साल का लाखों रुपये कमा सकते हैं।

- 30 सालों में 7 बार देश का सर्वश्रेष्ठ किसान का अवार्ड प्राप्त करने वाले अनुभवी किसानों के साथ एक टिचिनटिया।
- देश का सर्वप्रथम सर्टिफाइड ऑर्गेनिक हर्बल फार्मस के साथ मां दंतेश्वरी हर्बल ग्रुप का समर्थन और संयुक्त विपणन।
- कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मानों के साथ-साथ क्लिन्टियर फार्मट/रिसेट फार्मट ऑफ इंडिया का अवार्ड भी दिया गया है मां दंतेश्वरी हर्बल ग्रुप के डॉक्टर राजाराम त्रिपाठी को।

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें :
मुख्य कार्यालय: मां दंतेश्वरी हर्बल ग्रुप
151, हर्बल इस्टेट, कोडागांव बरतत (छत्तीसगढ़) 494226
सहायकीय कार्यालय : जी 14 हर्बल इस्टेट, एचआर टावर के बगल में, अशोक नगर (पुरानी अखिल कॉलोनी) टिंग रोड-1, रायपुर (छत्तीसगढ़) - 492013
मो. : 9425265105
सुबह 11:00 से 5:00 राख्य के बीच ही फोन करें। फोन : 0771-2263433

सहकारी क्षेत्र में तकनीकी नवाचार पर जोर

पैक्स पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में प्राथमिक कृषि सहकारी ऋण समितियों (पैक्स) में उभरती प्रौद्योगिकियों पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यक्रम का उद्घाटन सहकारिता मंत्रालय के सचिव डॉ. आशीष कुमार भूटानी ने किया। यह कार्यशाला पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित की गई, जिसमें देशभर के 12 राज्यों से आए पैक्स प्रतिनिधियों, मंत्रालयों, स्टार्टअप्स और सहकारी संगठनों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में डॉ. भूटानी ने कहा कि पैक्स की भूमिका अब पारंपरिक कृषि ऋण वितरण से कहीं आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में सहकारिता मंत्रालय ने पैक्स



को डिजिटल युग के अनुरूप ढालने के लिए कई ऐतिहासिक पहल की है। उन्होंने पैक्स कम्प्यूटरीकरण की तुलना रेलवे टिकट प्रणाली से करते हुए कहा कि पारदर्शिता, दक्षता और वित्तीय समावेशन के लिए तकनीकी उन्नयन अत्यंत आवश्यक है। इस योजना में अब तक लगभग 3000 करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं और 80,000 पैक्स के डिजिटलीकरण का लक्ष्य है।

कार्यशाला में चर्चा के दौरान कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, सटीक

कृषि उपकरण, फिनटेक समाधान, और डिजिटल सूचना प्रणाली जैसे विषयों पर भी चर्चा हुई। डॉ. भूटानी ने कहा आज पैक्स के 13 करोड़ से अधिक सदस्य हैं। उन्होंने कहा पैक्स एकमात्र ऐसी राज्य स्तरीय संस्थाएं हैं जो अधिनियम द्वारा समर्थित हैं, इन्हें देश के ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार की 'वन स्टॉप शॉप' बनाने की पूरी क्षमता है। उन्होंने बताया कि किसानों को मौसम, कीट आक्रमण, वर्षा पूर्वानुमान जैसी जानकारी देना अब पैक्स की नई जिम्मेदारी हो सकती है।

कृषि विश्वविद्यालय का बायोटेक्नोलॉजी सेंटर हुआ आईएसओ 9001:2015 एवं 14001:2015 से प्रमाणित

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के जैव प्रौद्योगिकी इकाई को गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के लिए प्रतिष्ठित आईएसओ 9001:2015 तथा 14001:2015 प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ है। मैग्नीट्यूड मैनेजमेंट सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रदान किया गया यह प्रमाणन तीन वर्षों के लिए वैध है, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, परिचालन उत्कृष्टता एवं उच्च गुणवत्तायुक्त नवीन तकनीकों के प्रयोग के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। आईएसओ 9001:2015 तथा 14001:2015 प्रमाणन एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त मानक है जो संस्थागत प्रशासन, शैक्षणिक विकास और अन्य क्षेत्रों में सर्वोत्तम प्रथाओं के पालन को सुनिश्चित करता है।

कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर अंतर्गत बायोटेक्नोलॉजी सेंटर में पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली का मूल्यांकन किया गया है और पाया गया है कि यह आवश्यकताओं के अनुरूप है इसलिए विश्वविद्यालय को प्रतिष्ठित आईएसओ 9001:2015 तथा 14001:2015 प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। कुलपति डॉ. अरविंद कुमार शुक्ला ने इस उपलब्धि को हासिल करने के लिए पूर्व कुलसचिव अनिल सक्सेना, जैव प्रौद्योगिकी



केन्द्र प्रभारी डॉ. सुषमा तिवारी एवं समस्त विश्वविद्यालय द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

उच्च तकनीकी कार्यक्षेत्र के लिए मिला आईएसओ 9001:2015 तथा 14001:2015 प्रमाणपत्र

जीनोमिक्स, टिशू कल्चर, माइक्रोस्कोपी, जीन बैंक और लिक्विड नाइट्रोजन योजना के लिए अनुसंधान और विकास सुविधाएं प्रदान के साथ-साथ यह जेल इलेक्ट्रोफोरेसी यूनिट, फ्रैगमेंट एनालाइजर, पीसीआर, आरटी पीसीआर, डिजिटल पीसीआर, सीक्वेंसर, जीई बैंक स्टोरेज, लिक्विड नाइट्रोजन प्लांट, हाई-टेक पॉलीहाउस, नेट हाउस, एरोपॉनिक्स यूनिट, उच्च गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान कार्य सहित उन्नत मशीनरी के कार्यक्षेत्र में प्रदान किया गया है।

नई दिल्ली। देश के अधिकतर हिस्सों में जुलाई में दक्षिण पश्चिम मानसून के सामान्य से अधिक रहने की संभावना है, जो दीर्घावधि औसत (एलपीए) का 106 फीसदी रहेगा। विभाग के आंकड़े यह भी दर्शाते हैं कि जुलाई में पूर्वोत्तर भारत के अधिकतर हिस्सों, पूर्वी भारत के कई इलाकों और बिहार सहित दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत के कई हिस्सों में सामान्य से कम बारिश होने के आसार हैं।

मौसम विभाग ने यह भी कहा कि 2025-26 की सर्दियों तक अल नीनो आने की कोई संभावना नहीं है और 2025 के दक्षिण-पश्चिम

देश के कई क्षेत्रों में भारी बारिश के आसार

नई दिल्ली। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने कहा कि अगले छह से सात दिन में हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में भारी भारी बारिश की संभावना है। विभाग ने कहा कि इस अवधि के दौरान उत्तर-पश्चिम, मध्य और पूर्वी भारत के कई हिस्सों में मानसून सक्रिय रहेगा। विभाग के अनुसार मध्य प्रदेश, विदर्भ, छत्तीसगढ़, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और झारखंड में भी कुछ दिनों तक भारी बारिश हो सकती है जबकि झारखंड और ओडिशा में कुछ दिनों में भारी बारिश हो सकती है। आईएमडी ने कहा कि कोंकण, गोवा, मध्य महाराष्ट्र और गुजरात में भी भारी से बहुत भारी बारिश के आसार हैं। सौराष्ट्र और कच्छ में भी अगले सात दिनों में भारी बारिश की संभावना है। इसके साथ ही, पूर्वोत्तर भारत के कुछ इलाकों में अलग-अलग जगहों पर भारी से बहुत भारी बारिश हो सकती है। तटीय आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल और कर्नाटक में भी सप्ताह के कुछ दिनों में भारी बारिश का अनुमान है।

जुलाई में सामान्य से अधिक बारिश का अनुमान

मानसून सीजन के उत्तरार्द्ध में तटस्थ अल नीनो की स्थिति की करीब 82 फीसदी संभावना है। मौसम विभाग ने बताया है कि भारत में मानसून को प्रभावित करने वाला बड़ा कारण हिंद महासागर डायपोल (आईओडी) भी अगले तीन महीने तक तटस्थ रहने की उम्मीद है। विभाग ने यह भी कहा कि जुलाई में औसत अधिकतम तापमान कई इलाकों में सामान्य से कम रह सकता है। मगर पूर्वोत्तर, उत्तर-पश्चिम, पूर्वी और दक्षिणी प्रायद्वीप के कई

हिस्सों में सामान्य से अधिक तापमान की संभावना है। मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने ऑनलाइन संवाददाता सम्मेलन में कहा कि मध्य भारत और आसपास के दक्षिणी प्रायद्वीप में भारी बारिश की काफी संभावना है।

पूर्वी मघ्र में अधिक बारिश की संभावना

इनमें पूर्वी मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, विदर्भ और तेलंगाना के आसपास के इलाकों और गुजरात तथा महाराष्ट्र के कुछ हिस्से शामिल

हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह की बारिश का पैटर्न आमतौर पर तब होता है जब मानसून की रेखा अपनी सामान्य स्थिति से दक्षिण की ओर खिसक जाती है और जब कई कम दबाव वाली प्रणालियां बनती हैं।

बाणसागर में

कृषक दूत में
विज्ञापन
सदस्यता हेतु
संपर्क करें।
श्री अजय
सोथिया
मे. सोथिया बीज भंडार
बाणसागर
जिला राहडोल (ग.प्र.)

स्थाई कृषि समृद्धि हेतु समेकित समाधान

- समर्पित एवं प्रशिक्षित कर्मियों द्वारा नवीनतम फार्म प्रौद्योगिकी का प्रचार सुनिश्चित करना।
- अपने व्यापक वितरण जालकेव द्वारा एम.ओ.पी., डी.ए.पी., चूरिया एवं अन्य कृषि साधनों को द्वार पर पहुंचाना।
- अपने सभी कार्यों द्वारा नि:शुल्क सेवा-आई.पी. का नि:शुल्क है।
- भारत को समृद्ध देशों की सूची में सबसे आगे लाने का स्वप्न।
- गन्ना उत्पादकों की सेवा हेतु चीनो उत्पादन में निवेशित।

इंडियन पोटाश लिमिटेड
पोटाश भवन, 10 वीं, गानेवा पार्क,
मुम्बई रोड, नई दिल्ली-110060.
दूरभाष : 25761540, 25763570,
25732438, 25729084. फ़ैक्स : 25755313

807-808, पांचवीं मंजिल, कॉम्प्लेक्स जॉन, आशिमा पॉल, होलागाना रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन : 0755-4058336, 4058337, फैक्स : 0755-4058338

निष्ठा, विश्वसनीयता एवं कृषि श्रेष्ठता का गर्वपूर्ण प्रतीक

किसानों को तिल बीज, नैनो डीएपी एवं नैनो यूरिया का वितरण

जबलपुर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (तिल एवं रामतिल) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के परियोजना समन्वयक डॉ. ए.के. विश्वनकर्मा के निर्देश पर जनजातीय उप योजना के अंतर्गत आदिवासी जिला मण्डला के ग्राम लावरमुडिया एवं ग्राम पाठाचौरई, ब्लॉक बीजाडाण्डी में एक दिवसीय तिल विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया एवं किसानों को तिल के बीज के साथ में तिल के लिए उर्वरक, नैनो डीएपी एवं नैनो यूरिया तथा शाकनाशी दवा एवं प्रकाशित सामग्री प्रदान की गई।

इस संस्था के कृषि वैज्ञानिक एवं जनजातीय उप योजना के नोडल अधिकारी डॉ. के.एन. गुप्ता द्वारा जनजातीय उप योजना के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। उन्होंने बताया यह उपयोजना भा.कृ.अ.प. नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित है एवं यह योजना देश के



विभिन्न राज्यों के आदिवासी बाहुल्य जिलों में चलाई जा रही है। इसी के तहत यह उपयोजना आदिवासी बाहुल्य जिला मण्डला में चलाई जा रही है। इसके तहत आदिवासी किसानों को निशुल्क तिल फसल का बीज, खाद एवं खरपतवारनाशक उपलब्ध कराया गया है जिससे तिल खेती को इस जिले में बढ़ावा दिया जा सके। डॉ. गुप्ता ने आधुनिक कृषि तकनीकी को अपनाकर और बेहतर फसल प्रबंधन द्वारा तिल फसल का उत्पादन बढ़ाने के तरीकों को विस्तृत रूप से बताया। जिससे उपरोक्त तिलहनी फसलों की

पैदावार में वृद्धि के साथ-साथ किसानों की आय में वृद्धि हो सके।

इस कार्यक्रम में ग्राम पंचायत पाठाचौरई के सरपंच द्वारका प्रसाद, ग्राम पंचायत पाठाचौरई के रोजगार सहायक दीपक उइके, पेसा मोबिलाइजर भानेश्वरी मसराम, ग्राम पाठाचौरई किसान मित्र हामेर बरकड़े, ग्राम लावरमुडिया की किसान मित्र लावरमुडिया एवं ग्राम पंचायत पाठाचौरई के 50 से अधिक आदिवासी किसानों ने भाग लिया। इस मौके पर ग्राम पंचायत पाठाचौरई के सरपंच द्वारका प्रसाद द्वारा ग्राम के किसानों की तरफ से इस प्रशिक्षण को बहुत उपयोगी बताया गया एवं उन्होंने किसानों की तरफ से संस्था को आश्वासन दिया गया कि वह तिल की फसल लगाएंगे। जनजातीय उप योजना के यंग प्रोफेशनल देव्यरत्न उइके द्वारा इस कार्यक्रम का संचालन किया गया। ग्राम पाठाचौरई के किसान मित्र हामेर बरकड़े एवं ग्राम लावरमुडिया की किसान मित्र हीराकली बरकड़े द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

से फसल की सुरक्षा की जा सकती है। ▶ ट्राइकोडर्मा फफूंद द्वारा बीजोपचार करने से फसल को विभिन्न फफूंद जनित रोगों से सुरक्षित किया जा सकता है। यदि बुवाई से पूर्व बीजोपचार नहीं किया गया है तो नर्सरी से निकालकर खेत में पौधे लगाये जाने के पूर्व अंकुरित पौधों की जड़ों को ट्राइकोडर्मा फफूंद के चूर्णयुक्त पानी में 20 मिनट तक रखें तत्पश्चात् पौधे खेत में लगायें।

(पृष्ठ 13 का शेष) खरीफ सब्जियों का रोग

▶ उचित समय पर बुवाई करें एवं कीट व रोगों के प्रकोप के अनुसार बुवाई समय में परिवर्तन करें। ▶ एक खेत में हर मौसम एक ही फसल न लगाएं। फसल चक्र अपनाते हुए हर मौसम में बदल-बदल कर फसल लगायें। ▶ मुख्य फसल के साथ अन्य प्रपंच फसलें लगायें ताकि विभिन्न-विभिन्न कीटों से मुख्य फसल की सुरक्षा हो सके। जैसे- मिर्च के साथ टमाटर लगाने से विषाणु रोग से फसल का बचाव किया जा सकता है। ▶ पेड़-पौधों को सूखने एवं फफूंदजनित रोगों से बचाव हेतु गाय के ताजे गोबर में दीमक की बाँबी से निकली मिट्टी मिलाकर छिड़काव करें। ▶ बुवाई से पूर्व नीम की खली, गोबर की सड़ी हुए खाद मिलाकर उपयोग करने से विभिन्न जीवाणु जनित रोगों

(पृष्ठ 11 का शेष)

अरहर उत्पादन.....

एन.पी.बी. (विषाणु) 250 एल.ई. फली छेदक गिडार समतुल्य प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करना चाहिए।

पत्ती लपेटक (लीफ रोलर): इस कीट की सूडियां को लपेटकर सफेद जाला बनाकर उसी में छिपकर पत्तियों को खाती है। ये फूल की कलियों एवं कोमल फलियों को भी हानि पहुंचाती है।

प्रबंधन: आई.पी.एम. प्रबंधन के अन्दर फुनगी की लिपटी हुई पत्तियों/फलियों को तोड़कर जला देना चाहिए। अधिक प्रकोप की दशा डायमिथोएट 3 मि.ली./10 ली.पानी का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

अरहर के प्रमुख रोग एवं उनका प्रबंधन

उकठा रोग: इस रोग से अरहर की फसल को सर्वाधिक क्षति होती है। यह रोग फ्यूजेरियम उडम नामक कवक द्वारा फैलता है। जब पौधे 30 से 45 दिन के हो जाते हैं तब से वे इस के चपेट में आने लगते हैं। इसमें पत्तियां पीली पड़कर झुक जाती हैं और पूरा पौधा सूख जाता है। जाड़ों में कवक के प्रभाव से पौधों के अन्दर खाद्य पदार्थ का संचार रूक जाता है। इसमें जड़ें सड़कर गहरे रंग की हो जाती हैं। जड़ से लेकर तनों की कुछ ऊंचाई तक छाल को हटाने से काले रंग की धारियां दिखाई पड़ती हैं।

प्रबंधन: प्रभावित खेत की गर्मी में गहरी जुताई करके पूर्व फसल की दबी हुई जड़ों को निकालकर जला देना चाहिए। प्रभावित खेत में अगले 5-6 वर्ष तक अरहर की फसल नहीं लेना चाहिए। हरी खाद

के प्रयोग तथा ज्वार/तिल के साथ मिलाकर खेती करने पर रोग का प्रकोप कम हो जाता है। रोग रोधी किस्मों की बुआई करनी चाहिए।

झुलसा रोग: यह फफूंद जनित रोग है। इस रोग के कारण पत्तियों एवं फूलों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। जिससे वे सूखने लगते हैं। इसके साथ फूलों पर भी गहरे भूरे धब्बे बनकर उसे सूखा देते हैं जिससे फलियां बनती ही नहीं, यदि बनती भी हैं तो वे सूख जाती हैं।

प्रबंधन: इसके प्रबंधन हेतु मैकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। बीजों की कार्बेन्डाजिम की 2.5 ग्राम मात्रा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करके बोना चाहिए। भूमि में 5 कि.ग्रा प्रति हेक्टेयर ट्राईकोडर्मा बिरिडी नामक जैव फफूंद को मिलाना चाहिए।

अरहर का बाँछ चितेरी रोग: इस रोग का प्रमुख लक्षण यह है कि पौधा बौना और पत्तियों का रंग व आकार सामान्य से काफी छोटा एवं पतला हो जाता है एवं उन पर अनियमित आकार की हल्की एवं गहरी चित्तियां पड़ जाती हैं। रोग ग्रसित पौधे लम्बाई में छोटे रह जाते हैं। यह रोग एक

विषाणु द्वारा होता है। जिसे अरहर बाँध्यता मोजेक विषाणु का नाम दिया गया है। इसका संचरण खेतों में अति सूक्ष्म कीट (इरियोफिड माइट) द्वारा होता है।

प्रबंधन: खेतों में उचित सफाई रखनी चाहिए। खड़ी फसल में जैसे ही बाँछ चितेरी रोग ग्रसित पौधा दिखाई दें, उसे उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। रोगरोधी किस्मों का प्रयोग करें। फसल की प्रारंभिक अवस्था में रोग दिखाई देने पर कीटनाशी जैसे- मेटासिस्टास्क 1 मि.ली. या डाईमिथोएट 0.5 मि.ली./लीटर पानी में घोल बनाकर 10 दिनों के अंतराल पर दो या तीन छिड़काव करने से रोग का फैलाव रोका जा सकता है।

भैरुदा में



कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री राहुल कुमार सागर
मे. न्यू राहुल एग्रो एजेंसी
ग्राम-भैरुदा (नसरुल्लागंज)
जिला-सीहोर (म.प्र.)
मो. 9171959521

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-



एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875,
9300754675, 9826686078



मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स

(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

● औषधीय ● वन ● सब्जी ● फूल ● बीज ● स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ● कीटनाशक ● जैविक खाद ● गार्डन टूल ● जैविक उत्पाद ● ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
वितरक - ● निर्मल सीड्स, जलगांव ● कलश सीड्स, जालाना ● अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ● दिनाकर सीड्स, गुजरात ● सर्टिड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ● स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ● जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ● स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ● अनु प्रोडक्ट्स लि. ● श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

जायद मूंग की फसल में पीला मोजाइक रोग से मिली मुक्ति

युवा कृषि वैज्ञानिक की सलाह काम आई-मूंग की फसल लहलहाई

हरदा। प्रदेश में पिछले पांच-छः वर्षों के दौरान ग्रीष्मकालीन मूंग का रकबा तेजी से बढ़ा है। जिन किसानों के पास सिंचाई का पर्याप्त साधन है वे सभी रबी फसलों की कटाई के पश्चात मूंग की खेती करते हैं। वर्तमान में जायद फसलों का रकबा 14 लाख हेक्टेयर के लगभग है। इसमें 12 लाख हेक्टेयर में मूंग लगायी जाती है। मूंग की फसल में कई तरह के रोग-व्याधियों के कारण अपेक्षाकृत उत्पादन नहीं मिल पाता। मूंग की फसल में पीला मोजाइक रोग से हर वर्ष अत्यधिक नुकसान होता है। चूंकि यह रोग वायरस जनित रोग है इसलिये इसका फैलाव पूरे खेत में तेजी से होता है। विगत माह हरदा प्रवास के दौरान मसनगाँव निवासी राजेश गुर्जर ने मूंग का खेत दिखाया जिसमें पीला मोजाइक रोग का प्रकोप 20 प्रतिशत खेत में था। कृषक राजेश गुर्जर को इसकी रोकथाम की उपाय बताया



कृषक सफलता की कहानी

गई। उन्हें कैसा परिणाम मिला स्वयं बतायेंगे।

पीला मोजाइक रोग की कहानी- कृषक की जुबानी

मैंने इस साल दस एकड़ खेत में मूंग लगाया था जिसकी बोनी 20 मार्च 2025 को किया। फसल एक माह की होने के बाद उसमें बीच-बीच में पीले पौधे दिखने लगे। पता चला कि धीरे-धीरे यह रोग पूरे खेत में फैलने लगा। गुर्जर कृषि सेवा केन्द्र में मेरी मुलाकात युवा कृषि वैज्ञानिक डॉ. शुभम मिश्रा से हुई। मैंने उन्हें फसल दिखाया। फसल की बारीकी से निरीक्षण करने पर पता

चला कि शुरुआत में नयी पत्तियों के ऊपर हल्के बिखरे हुए पीले धब्बे दिखाई पड़ते हैं। बाद में धब्बे बड़े होकर पूरी पत्तियां पीली हो जाती है। ग्रसित पौधों की बढ़वार रुक जाती है एवं रोग ग्रस्त पौधों में फल एवं फलियाँ नहीं लगती हैं। यह वायरस जनित रोग है जो सफेद मक्खी द्वारा एक पौधे से दूसरे पौधे में फैलता है। समय पर नियंत्रण नहीं होने से पूरे खेत में यह रोग फैल जाता है।

प्रबंधन के उपाय से मिली सफलता

डॉ. शुभम मिश्रा पी.एच.डी. पादप रोग जवाहरलाल नेहरू कृषि

विश्वविद्यालय जबलपुर ने बताया कि बुवाई से पहले बीज को इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यूएस 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार करके बुवाई करना चाहिये। रोगग्रस्त पौधों को खेत से बाहर करने की सलाह दी। साथ ही दैहिक कीटनाशी डाईमथोएट 750 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर या थायोमेथाक्जाम 25 डब्ल्यूएस 100 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना बताया।

ऊपर बतायी गई विधियां रामबाण साबित हुई। एक सप्ताह के भीतर पौधों का पीला होना रुक गया। रोग ग्रस्त पौधों को तुरंत खेत से बाहर किया। पिछले महीने मूंग की कटाई करने पर मुझे 10 एकड़ से 55 क्वंटल मूंग मिली। मैं डॉ. शुभम मिश्रा को तहेदिल से धन्यवाद करता हूँ।

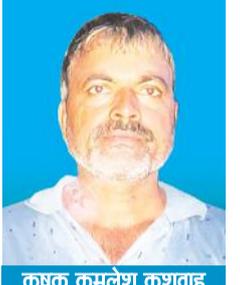
प्रस्तुति-

डॉ. शुभम मिश्रा पी.एच.डी. (पादप रोग) जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

धानुका का पर्ज करे सकरी व चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की प्रभावी रोकथाम

धानुका की कहानी-किसान की जुबानी

मैं कमलेश कुशवाह, गाँव तेनीपुरा, तहसील पृथ्वीपुर, जिला निवाड़ी का निवासी हूँ। मेरा मुख्य कार्य खेती है। मेरे पास 5 एकड़ सिंचित जमीन है। जिस पर मैं खरीफ सीजन में मूंगफली की खेती करता हूँ। मैंने पिछले साल मूंगफली की फसल में खरपतवारों की रोकथाम के लिए धानुका एग्रीटेक लिमिटेड का पर्ज नामक खरपतवारनाशक उपयोग किया। जिसका मुझे बहुत अच्छा परिणाम मिला। पर्ज के उपयोग से मुझे बहुत सारे फायदे हुए जैसे-सकरी पत्ती एवं चौड़ी पत्ती के खरपतवारों पर बहुत ही अच्छा नियंत्रण मिला। मैंने पर्ज 400 मिली 150 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से स्प्रे किया। परिणामों को देखते हुए इस साल भी मूंगफली की फसल में धानुका के खरपतवारनाशक पर्ज का उपयोग करूंगा। मेरा किसान भाइयों से अनुरोध है कि आप भी खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के लिए पर्ज का उपयोग करें। अधिक जानकारी के लिए मुझसे मोबाइल नंबर 84630-41274 पर संपर्क कर सकते हैं।



कृषक कमलेश कुशवाह



महिन्द्रा ने जून में बेचे 51,769 ट्रैक्टर



मुंबई। प्रमुख ट्रैक्टर निर्माता कंपनी महिन्द्रा एंड महिन्द्रा लिमिटेड ने जून महीने के ट्रैक्टर बिक्री से जुड़े आंकड़े जारी कर दिए हैं। आंकड़ों के अनुसार कंपनी ने घरेलू बिक्री और निर्यात के लिहाज से बीते साल के जून महीने की तुलना में अच्छा प्रदर्शन किया है। जून 2024 में महिन्द्रा ने घरेलू बाजार में 45,888 ट्रैक्टर की बिक्री दर्ज की थी। वहीं जून 2025 में घरेलू बिक्री 13 फीसदी बढ़कर 51,769 ट्रैक्टर पर पहुंच गई है। कंपनी ने जून 2025 में कुल 53,392 ट्रैक्टर बेचे इसमें इसमें निर्यात किए गए 1,623 ट्रैक्टर भी शामिल हैं। जबकि गत वर्ष 2024 में घरेलू बिक्री एवं निर्यात मिलाकर 47,319 ट्रैक्टर बेचे थे। महिन्द्रा एंड महिन्द्रा लिमिटेड के फार्म इक्विपमेंट बिजनेस के अध्यक्ष विजय नाकरा के अनुसार हमने जून 2025 के दौरान घरेलू बाजार में 51, 769 ट्रैक्टर बेचे हैं, जो पिछले साल की तुलना में 13 फीसदी की बढ़ोतरी है। जून 2025 में उद्योग ने बढ़ोतरी दर्ज की, जो मुख्य रूप से रबी फसल की कटाई से नकदी आगमन और अधिकांश क्षेत्रों में मानसून के आगमन से प्रेरित थी। उन्होंने कहा कि जून में बेहतर बारिश ने आगामी खरीफ सीजन को अच्छी तरह से समर्थन दिया है। रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन के साथ-साथ किसानों की आय में सुधार के लिए सरकारों द्वारा की जा रही पहलों से आने वाले महीनों में ट्रैक्टर की मांग में बढ़ोतरी होने की उम्मीद है।

अयाका से करें फसलों में इल्लियों की समस्या का समाधान

इंदौर। देश की प्रसिद्ध कम्पनी जेयू एग्री साइंसेस प्रा.लि. ने अपना पहला आधुनिक पेटेंटेटेड उत्पाद अयाका बाजार में उपलब्ध करवाया है। अयाका नयी तकनीक पर आधारित कीटनाशक है, जो फसलों को इल्लियों के प्रकोप से सुरक्षित करता है। अयाका के प्रयोग से मिलने वाले आश्चर्यजनक परिणामों को देखते हुए यह किसानों की पहली पसंद बन गया है। अयाका नवीन अनुसन्धान पर आधारित तीन कॉम्बिनेशन प्रोडक्ट है और इसके कॉम्बिनेशन आपस में मिलकर सिनर्जिस्टिक प्रभाव के कारण चार-गुना असर दिखाते हैं। अयाका की "Quadforce" की अनोखी तकनीक इसे अन्य उत्पादों से अलग और अधिक असरदार बनाती है।

अयाका स्पर्शजनित और पेट के जहर के माध्यम से इल्लियों कीटों में प्रवेश करता है और एक से अधिक तरीकों से इल्लियों के नर्वस सिस्टम पर अटैक करता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण अयाका के प्रयोग से इल्लियों पर प्रभावशाली नियंत्रण मिलता है। साथ ही अयाका में है क्विक-एक्शन फॉर्मूला, जिससे प्रयोग के 24-48 घंटों में असर दिखना शुरू हो जाता है। अयाका इल्लियों के जीवन चक्र को बाधित कर देता है, जिससे लंबे समय तक इल्लियों

जेयू एग्री साइंसेस का आधुनिक पेटेंटेटेड उत्पाद अयाका

पर नियंत्रण मिलता है। किसानों के लिए अपनी फसल को सुरक्षित रखने और अधिक से अधिक उत्पादन पाने के लिए अयाका निश्चित रूप से मददगार साबित हो रहा है।

अयाका का प्रयोग छिड़काव/स्प्रे के माध्यम से किया जा सकता है। अयाका का प्रयोग 300 मिली लीटर प्रति



एकड़ की अनुशंसित मात्रा में 200 लीटर पानी के घोल में मिलाकर किया जाना चाहिए। लम्बे असर के लिए फसल में इल्लियों कीटों की शुरुआती अवस्था दिखने पर अयाका का प्रयोग करना चाहिए। अयाका का प्रयोग धान की फसल में पत्ता लपेट और तना छेदक इल्लियों के लिए किया जा सकता है।

अयाका की कहानी-किसान की जुबानी

जेयू के अयाका का इस्तेमाल करने पर फसल की सभी प्रकार की इल्लियां मर जाती हैं और फसल भी दमदार रहती है। यह कहना है गांव सम्नापुर, तहसील बनखेडी, जिला नर्मदापुरम के एक अग्रणी कृषक अनुराग दुबे का। श्री दुबे के अनुसार मेरे पास 26 एकड़ जमीन है। मैंने पिछले साल 18 एकड़ में मूंग व 8 एकड़ में बैंगन लगाया था। मैंने बैंगन की फसल में इल्लियों की समस्या को देखते हुए जेयू का अयाका इस्तेमाल किया, जिसका परिणाम बहुत बेहतरीन मिला। जिसके बाद मैंने मूंग में भी अयाका का इस्तेमाल किया और जैसा परिणाम मैं चाहता था मुझे वैसा ही मिला। अयाका के उपयोग से इल्लियों पर लम्बा नियंत्रण तो मिला ही, साथ ही साथ फसल में हरापन भी बना रहा। अच्छे परिणाम देखने के बाद मैंने तय कर लिया है कि आगामी फसलों में भी इल्लियों की रोकथाम के लिए मैं अयाका का इस्तेमाल करूंगा। अनुराग दुबे अपने अनुभव के आधार पर अन्य किसान भाइयों को भी जेयू के गुणवत्तायुक्त उत्पादों के उपयोग की सलाह देते हैं। अयाका के बारे में अनुभव जानने के लिए किसान भाई उनके मोबाईल नंबर 93406-33178 पर संपर्क कर सकते हैं।



कृषक अनुराग दुबे

देश के प्रत्येक किसान को पोषक तत्व प्रबंधन का महत्व बताने के प्रति आरएमपीसीएल प्रतिबद्ध : श्री विनीत जैन

इंदौर। मिट्टी की खराब होती सेहत और उससे उत्पादित हानिकारक अनाज भविष्य के लिये सबसे बड़ा खतरा है। जब तक जमीन को आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति नहीं होगी तब तक प्रोटीनयुक्त खाद्यान्न के बारे में सोचना गलत होगा। देश के प्रत्येक किसान को पोषक तत्व प्रबंधन की तकनीक से अवगत कराने का यह सही समय है।

उक्त उद्गार उर्वरक उद्योग की अग्रणी कंपनी एवं सदैव किसानों के हितों का ध्यान रखने वाली आरएम फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री विनीत जैन एवं डायरेक्टर डिजिटल मार्केटिंग साक्षी जैन ने एक इलेक्ट्रॉनिक चैनल को दिये गये विशेष साक्षात्कार में व्यक्त किया। श्री विनीत जैन ने बताया कि अमेरिका से मैकेनिकल इंजीनियरिंग करने के पश्चात नौकर छोड़कर उन्होंने खेती-किसानी से जुड़े हुये उद्योग को चुना। आरएम फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड के माध्यम से 'महावीरा जिरोन' नामक उर्वरक किसानों को उपलब्ध कराकर मिट्टी को आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति करने का प्रयास किया जा रहा है।

श्री जैन ने बताया कि किसान सामान्यतः सभी फसलों में यूरिया एवं डीएपी का प्रयोग करते हैं। इस वजह से मिट्टी की सतह दिनों-दिन सख्त होती जा रही है। जमीन को उपजाऊ बनाने एवं पोषणयुक्त अनाज पैदा करने के लिये माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की अत्यंत आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि वैश्विक स्तर पर जहां माइक्रोन्यूट्रिएंट्स का उपयोग 4 किलोग्राम प्रति एकड़ है वहीं भारत में मात्र 800 ग्राम प्रति एकड़ उपयोग हो रहा है। पर्याप्त पोषक तत्व प्रबंधन के बिना प्रोटीनयुक्त अनाज पैदा नहीं हो सकता। आरएम फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड द्वारा उत्पादित महावीरा जिरोन पावर



विनीत जैन

मैनेजिंग डायरेक्टर
आरएमपीसीएल

प्लस छः पोषक तत्वों कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर, जिंक, बोरॉन और मैग्नीशियम का अद्भुत मिश्रण है। यह खाद सभी फसलों का उत्पादन बढ़ाने एवं जमीन की सेहत को बरकरार रखने में उपयोगी है। कंपनी महावीरा जिरोन पावर प्लस के माध्यम से देश के प्रत्येक किसान को पोषक तत्व प्रबंधन की तकनीक पहुंचाना चाहती है। महावीरा जिरोन पावर प्लस अकेला ऐसा उत्पाद है जो खेती की उत्पादन लागत को कम करके पोषण युक्त अनाज पैदा करने में सक्षम है।

श्री जैन ने बताया कि वे अभी भी प्रतिदिन 5-10 किसानों से मिलकर उनका फैंडबैक लेते हैं। इस उत्पाद को बाजार में लाने के पहले किसानों से गहन चर्चा करके, कई मंडियों में जाकर कृषि उपज को देखकर, महावीरा जिरोन को लांच किया है। कंपनी के अनुसंधान एवं विकास विभाग में रात-दिन एक करके इस उत्पाद को लांच किया ताकि उत्पादित अनाज की गुणवत्ता में सुधार हो सके। श्री जैन ने बताया कि महावीरा जिरोन के उपयोग से उत्पादित अनाज बेहतर गुणवत्ता का रहता है साथ ही किसानों को बाजार भाव भी अधिक मिलता है। उन्होंने बताया कि विश्व में अनाज की उत्पादकता सबसे अधिक ब्राजील में है। भारत में असंतुलित उर्वरक उपयोग के कारण उत्पादन काफी कम हो रहा है। देश में कुछ जागरूक किसान तो अपनी फसलों में पोषक तत्व प्रबंधन पर ध्यान देते हैं लेकिन अधिकांश किसान इससे अनजान हैं। कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री विनीत जैन ने बताया कि हमारा उद्देश्य सिर्फ उत्पाद बेचना नहीं है बल्कि किसानों को सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपयोगिता से परिचित करवाना है। आरएमपीसीएल



साक्षी जैन

डायरेक्टर डिजिटल
मार्केटिंग
आरएमपीसीएल

फसलों की बुवाई से लेकर कटाई तक किसानों को सही सलाह देने के प्रति कटिबद्ध है।

महावीरा जिरोन पावर प्लस अकेला ऐसा उर्वरक है जो प्रोटीनयुक्त, गुणवत्ता से परिपूर्ण एवं 25 से 30 प्रतिशत अधिक उत्पादन देने में सक्षम है। **डिजिटल मार्केटिंग से किसानों को जोड़ा : साक्षी जैन**

आरएम फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड की डायरेक्टर डिजिटल मार्केटिंग साक्षी जैन ने इस मौके पर बताया कि वर्ष 2021 में कोविड के दौरान किसानों से संवाद करने के लिये डिजिटल प्लेटफार्म चुना। खेती-किसानी के बगैर किसी पारिवारिक पृष्ठभूमि के किसानों से सतत लगाव एवं निरंतरता रंग लायी जब देश के करोड़ों किसान आरएमपीसीएल के फेसबुक एवं इंस्टाग्राम के माध्यम से कंपनी से जुड़े। साक्षी जैन ने बताया कि दिन की शुरुआत किसानों से बात करके ही होती है। अब उन्हें खेती-किसानी एवं देश का किसान सबसे अच्छा लगता है। किसानों से निरंतर संवाद करके उनकी समस्याओं को जानकर समाधान करने में आनंद आता है। उन्होंने बताया कि महावीरा जिरोन से उत्पादित अनाज पोषणयुक्त तो है ही साथ ही उसके फसल अवशेष जो पशुओं को खिलाये जाते हैं वह भी पोषणयुक्त हैं। दुधारू पशुओं के लिये कंपनी ने 'न्यूट्रीहर्ड' पशु आहार उपलब्ध करवाया है जो अत्यधिक पोषण देने वाला है। उन्होंने बताया कि इंदौर की एक गौ-शाला को पहला 'न्यूट्रीहर्ड' बैग दिया था जहां पर अब बिना इंजेक्शन के दूध निकाला जाता है। 'न्यूट्रीहर्ड' से देश के लाखों पशुपालक लाभ कमा रहे हैं। न्यूट्रीहर्ड से प्राप्त दूध शत-प्रतिशत शाकाहारी है। कंपनी डायरेक्टर डिजिटल मार्केटिंग साक्षी जैन ने बताया कि अधिक से अधिक किसानों तक पोषक तत्व प्रबंधन की जानकारी पहुंचाने के प्रति कंपनी प्रतिबद्ध है।

मध्यप्रदेश की जिलेवार वर्षा

01 जून से 04 जुलाई 2025 तक (वर्षा मिमी में)

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
आगर-मालवा	139.0	138.0	1
अलीराजपुर	430.4	156.3	175
अशोकनगर	352.3	142.2	148
बड़वानी	183.3	136.4	34
बैतूल	192.0	188.1	2
भिंड	211.1	82.8	155
भोपाल	205.4	165.5	24
बुरहानपुर	121.4	163.3	-26
दतिया	144.9	107.0	35
देवास	155.3	160.6	-3
धार	218.3	152.7	43
गुना	339.9	155.5	119
ग्वालियर	274.2	91.4	200
हरदा	279.7	165.5	69
इंदौर	136.2	151.8	-10
झाबुआ	342.4	150.5	127
खंडवा	181.0	160.4	13
खरगोन	162.5	148.8	9
मंदसौर	198.0	126.8	56
मुरैना	299.3	85.5	250
नर्मदापुरम	226.3	203.5	11
नीमच	274.5	128.2	114
रायसेन	263.1	188.3	40
राजगढ़	299.9	140.4	114
रतलाम	302.9	136.7	122
सीहोर	219.8	169.8	29
शाजापुर	103.6	137.9	-25
श्योपुर	375.5	99.6	277

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
शिवपुरी	379.8	127.1	199
उज्जैन	148.1	148.9	-1
विदिशा	181.9	180.1	1
पश्चिमी म.प्र.	236.9	148.2	60
अनूपपुर	178.2	186.0	-4
बालाघाट	215.1	227.6	-5
छतरपुर	321.2	144.0	123
छिंदवाड़ा	242.8	194.0	25
दमोह	215.1	191.9	12
डिंडीरी	283.8	223.1	27
जबलपुर	220.6	194.9	13
कटनी	204.1	171.9	19
मंडला	466.3	216.3	116
नरसिंहपुर	230.6	175.5	31
निवाड़ी	484.3	112.2	332
पन्ना	256.8	178.1	44
रीवा	218.0	160.5	36
सागर	191.0	205.7	-7
सतना	178.3	167.4	7
सिवनी	308.8	209.8	47
शहडोल	200.0	163.2	23
सीधी	278.2	176.6	58
सिंगरौली	230.4	151.8	52
टीकमगढ़	451.4	154.8	192
उमरिया	232.6	188.2	24
पूर्वी म.प्र.	258.2	186.1	39
म.प्र. योग	246.1	164.7	49

(स्रोत : मौसम विभाग)

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हवीबगंज रेलवे स्टेशन के पास,
होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail: krishak_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....

संस्था का नाम.....

पूरा पता.....

ग्राम..... पोस्ट..... तहसील.....

जिला..... राज्य..... पिन कोड [] [] [] [] [] []

दूरभाष/कार्या. घर मोबा. :

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक : 700/-	■ द्विवार्षिक : 1300/-
■ त्रिवार्षिक : 1900/-	■ पंचवर्षीय : 3100/-
■ दसवर्षीय : 6100/-	■ आजीवन : 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र " कृषक दूत " की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूप (अंकों में)..... (शब्दों में).....

बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....

दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम..... हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक..... एवं हस्ताक्षर..... एवं संस्था सील

उम्मीद से
ज्यादा का वादा

ACE
TRACTORS

60.5 HP DI 6565 AV
TREM-IV ENGINE

4
सिलिण्डर का
4088 CC
दमदार इंजन

विशेषताएं

- पावर स्टीयरिंग
- कांस्टेंट मैग्न गियर
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- लिफ्ट 2000 kg
- तेल में डूबे ब्रेक
- आगे के टायर 7.5x16
- पीछे के टायर 16.9x28



दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- मैकेनिकल स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- व्हील बेस 1960 MM
- सिंगल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm



हर कदम हर डगर

ACE TRACTORS

हर किसान का हमसफर

100%
Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राइवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India

Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

NEW HOLLAND

हर फ्रील्ड पर अपना कमाल दिखाने की ताकत



विश्वस्तरीय टेक्नोलॉजी के
20-110 hp ट्रेक्टर



खेती की आधुनिक
मशीनों की व्यापक रेंज



500+
अधिकृत डीलर

*नियम व शर्तें लागू | 6 साल T-वॉरंटी Workmaster 105, Blue Series Simba 30 और Blue Series Simba 20 पर लागू नहीं है।

रिक्त स्थानों पर न्यू हॉलैंड ट्रेक्टर की डीलरशिप हेतु संपर्क करें -8396010363, newhollandindia@cnhind.com/टोल फ्री नं. 1800-419-0124